साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ५: २००८–०९

मुख पृष्ठ : गीतिका बजाज की नवीनतम कृति

15 फरवरी 1982 को मुंबई में जन्मी गीतिका बजाज की प्रांरभिक शिक्षा प्रसिद्ध कथीड्रल व सेंट एन्स मुंबई में हुई। फिर वह सोफिया कालेज गईं और बाद में बी.डी. सोमानी से उन्होंने टेक्सटाइल डिज़ाइन का कोर्स किया। गीतिका ने स्विट्ज़रलैंड में इंस्टीट्यूट विला पेरफ्यू का फिनिशिंग स्कूल भी किया। मुंबई की प्रमुख किंडरगार्टन (बालवाड़ी) 'हैडस्टार्ट' में सहयोगी शिक्षिका के रूप में दो वर्ष काम किया। बच्चों से उन्हें बहुत लगाव है।

बचपन से ही गीतिका को कला–संगीत में रुचि थी। समकालीन कला व शिल्प का ज्ञान उन्होंने मंगला ठाकुर से प्राप्त किया। मंजु कजारिया से उन्होंने केलीग्राफी व एचिंग की शिक्षा ली. फिर रत्नाजी जयकर से कला की बारीकियां समझीं।

प्रफुल्ला डहाणुकर उनकी मुख्य प्रेरणा स्रोत हैं। ललिता लाजमी की पेंटिंग्स गीतिका को प्रिय हैं। कवि, पर्यावरणविद् मां किरण बजाज तथा उद्योगपति पिता शेखर बजाज से उन्हें पूरा सहयोग व प्रोत्साहन मिला है।

सन 2005 में गीतिका की पहली चित्र प्रदर्शनी 'लीफ़ कलेक्शन' मुंबई में आयोजित हुई। 'लीफ़ कलेक्शन' की संपूर्ण प्रेरणा उन्हें 'प्रकृति' से प्राप्त हुई। दर्शकों और कला समीक्षकोंने उन्हें काफ़ी सराहा।

गीतिका की अगली चित्र प्रदर्शनी 'शेड्स ऑफ नेचर' अक्टूबर 2010 में मुंबई की विख्यात जहांगीर आर्टगैलरी में होने जा रही है। कला प्रेमियों को उसकी प्रतीक्षा है।

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ५: २००८-०९

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक

श्री उदय प्रताप सिंह

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त

श्री उमाशंकर शर्मा

डॉ. ए.के. आहूजा

डॉ. रजनी यादव

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

श्री मंजरउल वासै

श्री मुकेश मणिकंचन

डॉ.ओमप्रकाश सिंह

प्रकाशन

श्री मुकुल उपाध्याय

अनुक्रम

युवा कविता ४
वसंतोत्सव कविता पाठ ६
जानकीदेवी बजाज स्मृति व्याख्यानमाला ९
लघु कहानीकारों से मिलिए ११
लोक रंग १४
रामनवमी महोत्सव २०
संस्कृति एवं प्रकृति विचार मंथन कार्यशाला २१
सुगम संगीत गायन प्रतियोगिता २३
ग्रामीण काव्य समारोह २५
शहनाई वादन, स्पिक मैके के सहयोग से ३०
शिक्षक दिवस ३२
श्रीरामचरित्मानस की आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता ३४
स्थापना दिवस समारोह ३६
संत कबीर का नाट्य मंचन ४४
प्रश्नमंच ४६
न्यूज़ीलैंड में 'खोज' का मंचन ४९
अंतरराष्ट्रीय नाट्यलेखिका परिषद ५१
"अतीत के पन्नों से" ५३
सम्मान समाचार ५६

अध्यक्षीय निवेदन

शब्दम् की पाँचवीं वार्षिकी आप के हाथ में है। नित्य की भाँति इस बार भी शब्दम् ने यथाशक्ति व्यापक क्षेत्र में अपनी साहित्यिक सक्रियता बरकरार रखी।

इस वर्ष वर्धा में शेखर सेन की प्रस्तुति 'कबीर' उल्लेखनीय रही। देश के बाहर न्यूज़ीलैण्ड में आयोजित 'खोज' के मंचन में शब्दम् का योगदान सराहनीय पाया गया। मुम्बई विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्व की महिला लेखिकाओं के नाटकों के मंचन में भी शब्दम् ने आर्थिक सहयोग किया। शब्दम् का पाँचवाँ स्थापना दिवस मुम्बई में भव्य समारोह के रूप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुम्बई की धरती पर शिकोहाबाद की विभूतियों का अभिनन्दन भी हुआ।

इस वर्ष भी शिकोहाबाद नित्य की भाँति शब्दम् के विभिन्न कार्यक्रम–ग्रामीण कवि सम्मेलन, प्रश्नमंच, युवा कविता, शहनाई वादन, जानकी देवी बजाज स्मृति व्याख्यानमाला आयोजित करने में सफल रहा। समाज की सांस्कृतिक सेवा करने में शब्दम् परिवार को जो सफलता मिल रही है, उसके लिए मैं शब्दम् के समर्पित सदस्यों के साथ–साथ जनता जनार्दन को भी साधुवाद देना चाहती हूँ। श्री शशीकांत पांडे तथा श्रीमती आशा जोशी का योगदान विशेष उल्लेखनीय है।

आशा है हमें भविष्य में भी शुभचिन्तकों द्वारा सहयोग और प्रोत्साहन मिलता रहेगा।

विनीत

करण बजाज

कविता की शाम : युवा रचनाकारों के नाम

- **कार्यक्रम विषयः** युवा कविता (विविध रस काव्य पाठ समारोह)
- **दिनांकः** 03 दिसम्बर, 2008 • **समयः** दोपहर 12 बजे से 3:30 बजे • **स्थानः** ज्ञानदीप सी. सेके. पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम् एवं ज्ञानदीप सी.सेके. पब्लिक स्कूल
- **आमंत्रित कविगणः** गरिमा पाण्डेय, संजीव कुलश्रेष्ठ, अनिल वाजपेयी, गौरव चौहान ।

'आज जब हर क्षेत्र में युवाओं की भागीदारी बढ़ रही है तो कविता के क्षेत्र में भी इन तेज़ और सक्रिय कदमों की आहट सुनाई पड़नी चाहिये। कविता ही क्यों, कला के हर क्षेत्र में युवाओं को आगे आना चाहिये। वे आएं, इसकी प्रेरणा के लिये पर्याप्त साधन भी समाज को देने चाहियें। साहित्यिक संगठन मनन करें कि वे नई पीढ़ी को कितना और किस तरह खादपानी दे सकते हैं।' शब्दम् सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य उमाशंकर शर्मा ने युवा कवियों के नाम से आयोजित कविता की शाम कार्यक्रम में अपने विचारों के माध्यम से सभी को गहनता से सोचने पर विवश किया। इस कार्यक्रम में युवाओं की कविता ने राजनीति और वर्तमान परिवश में छायी विसंगतियों की भले ही कोई बड़ी समस्या को नहीं रखा, लेकिन इस ओर एक शुरुआत के तौर पर रचनाओं द्वारा किये गये प्रयास को सराहना मिली। गौरव चौहान ने अपनी कविता में प्रेम और मनुहार की बात को देशप्रेम तक परवान चढ़ाया तो संजीव कुलश्रेष्ठ ने 'दो कदम तुम चलो, दो कदम हम चलें' कह कर युवा मन के आपसी सामंजस्य की बात पर जोर दिया।

काव्य रस का आनन्द लेते स्कूली बच्चे तथा मंचासीन बांये से डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया, संजीव कुलश्रेष्ठ, गौरव चौहान, अनिल वाजपेयी,गरिमा पाण्डेय।

नवगीत – नई कविता

–गरिमा पाण्डेय

पर्यायवाची हैं दोनों
पीड़ा के गर्भ में पलना
तथा–कविता की दीपशिखा
बनकर जलना
शायद! यही मेरी कहानी है–
मेरी नियति है,
मेरी ज़िन्दगी, गोया
कोई दुःखान्त काव्यकृति है,
जिसकी किस्मत में
वृन्दावन की राधा का रास नहीं
चित्तौड़ की मीरा का त्रास नहीं,
किन्तु मुझे विश्वास है–
कि एक दिन, मेरे अन्तस में जी रही
रत्नावली भी, राम का पता पायेगी–
और उनके आगे एक प्रश्न को उठायेगी–
कि सत्य को पाने के लिए
क्या बेहद ज़रूरी होता है
स्त्री से पीछा छुड़ाना,
कभी गौतम द्वारा गोप को, और कभी–
तुलसी द्वारा रत्नावली को रुलाना?
सीतानाथ! यह तुम्हारा कैसा न्याय है?
तुम्हारा भक्त, अपनी पत्नी को
साथ रखने में असमर्थ है, असहाय है,
इसलिये– अपना ब्रह्म दर्शन अर्जुन को
सिखाओ
और मेरे लिए तो अपने हाथों में बाँसुरी
उठाओ–
मैं जैसी भी हूँ, मुझे स्वीकारो–अपनाओ।

संपर्कः
जिला– फर्रूखाबाद मो. नं.– 9839160419

मुक्तक देश के नाम

–गौरव सिंह चौहान

मुम्बई मराठियों की है ऐलान बांट दो
तुम भाषा–धर्म–जाति में इंसान बांट दो
महाराष्ट्र के गणेश हैं, यू0पी0 के कृष्ण–राम
कुर्सी की खींचतान में भगवान बांट दो।

संपर्कः
ग्रा0–छिमारा, पो0 सैफई इटावा (उ.प्र.)
मो.– 9457678378

छंद देश के नाम

–अनिल बाजपेयी

बार–बार वक्ष पर खाईं हमने गोलियां
बार–बार युद्ध में जीत ही दिलाई है।
बर्फ के समन्दरों में जागकर रात–रात
सीमा पर बैरियों की नींद ही उड़ाई है ।।
दिन–रात शीत–ताप फूल–शूल भूलकर
रेत की पहाड़ियों पर देश भक्ति गाई है।
अग्नि की ज्वाल में जलाया है जवानियों को
तब कहीं जाकर स्वतंत्रता दिलाई है ।

संपर्कः हापुड मो. नं.– 9837687824

काव्य पाठ करतीं गरिमा पाण्डेय।

वसंतोत्सवः स्थानीय कवियों द्वारा कविता पाठ

- **कार्यक्रम विषयः** वसंतोत्सव कविता पाठ
- **दिनांकः** 31 जनवरी, 2009 • **समयः**3:00 बजे से 5:30 बजे • **स्थानः**कल्पतरु, शिकोहाबाद
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कविगणः** श्री मंज़र उल वासै, श्री कृपाशंकर शर्मा 'शूल', ओमप्रकाश बेवरिया, राजीव रसधर, अनिल बेधड़क, राजीव शर्मा 'आधार', गिरीश फलक, श्रीमती शशि भारती।

वाणी और ज्ञान की देवी मां सरस्वती के प्राकट्य दिवस पर स्थानीय कवियों के बीच वसंतोत्सव मनाया गया। वासंती रंग में रंगे कवियों ने अपने भावों को शब्द दिये तो हिन्द लैम्प्स स्थित कल्पतरु का माहौल जैसे हरी चूनरी से ढंक गया। मंज़र उल वासै ने राजीव रसधर की सरस्वती वंदना से वासंती गोष्ठी का प्रारम्भ करवाया। रसधर ने 'हंसवाहिनी सुनो पुकार, बजने दो वीणा के तार', के माध्यम से स्वर की देवी का आह्वान किया। वसंत की बहार और फागुन की फुहार के इस बीच कवियों ने मस्ती की रचनाएं प्रस्तुत कीं, वहीं ओमप्रकाश बेबरिया, मंज़र उल वासै, गिरीश फलक आदि ने गंभीर विषयों पर रचनापाठ भी किया। कवियों ने प्रकृति से कुछ रंग लेकर शब्दों

कार्यक्रम में उपस्थित कविगण एवं संयोजक।

के रूप में प्रस्तुत किये। कवयित्री शशि भारती ने मधुर स्वर के खालीपन को भरते हुए ग़ज़ल पेश की, 'कैसे दीदार हो कि अपना सिर झुका लिया तुमने...'।

हास्य कवि अनिल बेधड़क की रचनाओं ने श्रोताओं को फागुन की मस्ती में डुबो दिया।

दूरदराज़ तक शायरी के हुनर से वाहवाही लूटने वाले गिरीश फलक की ग़ज़लों ने श्रृंगार की भाषा में दिल को छुआ। शब्दम सलाहकार समिति के सदस्य मंज़र उल वासै की पंक्तियां भावपूर्ण रहीं : ''हमने बस यह बात ज़िन्दगी में जानी है, जो कुछ भी हम सीखे हैं माँ की मेहरबानी है।'' गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे नगर के वरिष्ठ कवि कृपाशंकर शर्मा 'शूल' ने वसंत के उत्सव पर प्रकृति का चित्रण करते हुए मनोहारी कविता का पाठ किया

काव्य पाठ करते श्री गिरीश 'फलक'।

—''हरो घाघरो पहन कर पीली चूँदर ओढ़कर सरसों खेत में झूमी...।'' शशिकान्त पांडे और अभय दीक्षित ने कवियों का स्वागत करते हुए आयोजन की व्यवस्थाएं संभालीं।

काव्य पाठ करते श्री कृपाशंकर शर्मा 'शूल'।

चयनित रचनाएं

महक उठीं अमराइयाँ, पुहुपन पै मकरन्द।
छन्द सवैया तितलियाँ, मधुकर गीत गोविन्द।

कृपाशंकर शर्मा 'शूल'
422, शम्भूनगर शिकोहाबाद
मो. नं. 9837508866

जोड़ घटाकर बोलिये, कितना लिया बचाय।
शामिल वह ही कीजिए, संग आप के जाय।।

मंज़र उल वासै
द्वारा भारत विविध सेवा केन्द्र
आहूजा कम्पाउन्ड, स्टेशन रोड शिकोहाबाद
मो. नं. 9719696100

'रसधर' टूटे और बने, जाने कितनी बार।
माटी के बर्तन सभी, सबका एक कुम्हार।।

जीने को जल चाहिए, मीठा या नमकीन।
'रसधर' जल बिन मर गयी, तड़प–तड़प के मीन।।

अपना कोई आत है, हिचकी करे पुकार।
'रसधर' रहने दो खुले, घर के अभी किवार।।

राजीव 'रसधर'
1218 वी, शम्भूनगर, शिकोहाबाद
मो. नं. 9411496987

''कोख से जन्मे थे पूरे किन्तु बौने हो गये
जैसे किसी मुफलिस के घर के हम बिछौने हो गये।
वक्त की सुइयाँ हमारे विपरीत कुछ ऐसी चलीं,
खेलने आये थे हम पर खिलौने हो गये।।''

ओमप्रकाश गुप्त 'बेवरिया'
मो. नं. 4911060481

''तुम जूझ गये आतंकवादियों से जाकर
आतंकवादियों ने जब मुम्बई हिला दिया,
उनको तो तुमने मृत्यु के हाथों सौंपा खुद
हुए शहीद, मगर ये भारत जिला दिया।''

डा0 राजीव शर्मा 'आधार'
1618 कटरामीरा, शिकोहाबाद फिरोजाबाद, उ. प्र.
पंजाबी कालौनी हनुमान मंदिर के पास
मो. नं. 9412160006, 05676–234707

''कुछ काम ऐसा दोस्तो कर के दिखाइये
फ़िरकापरस्ती ताकतें जड़ से मिटाइये
अपने वतन को डँस रहे जो साँप की तरह,
ऐसों पे देश प्रेम का फ़तवा लगाइये।''

अनिल बेधड़क
270, मिश्राना, बड़ा बाजार शिकोहाबाद

''वेदना समझे हैं अपनी जो पराई पीर को
वह बदल सकते हैं अपने देश की तकदीर को।''

गिरीश 'फलक' शिकोहाबाद
मो. नं. 9358554131

आज बसंत मनाले सुहागन
आज बसंत मनाले;
अंजन–मंजन वार पिया मोरी,
लम्बे नेहर लगाए
तू क्या सोवे नींद की मारी
जागे तेरे भाग, सुहागन
आज बसंत मनाले
–अमीर खुसरो

जानकीदेवी बजाज स्मृति व्याख्यानमाला

- **कार्यक्रम विषयः** जानकीदेवी बजाज स्मृति व्याख्यानमाला
- **दिनांकः**19 फरवरी, 2009 • **समयः** दोपहर 12 बजे से 3:30 बजे • **स्थानः** बी.डी.एम.एम.कन्या इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम् एवं बी.डी.एम.एम.कन्या इण्टर कॉलेज, शिकोहाबाद
- **आमंत्रित सदस्यः** श्री उमाशंकर शर्मा, श्री मंज़र उल वासै, डा0 रजनी यादव, डा0 सर्वेश कुमारी, श्री महेश आलोक, श्री साहित्य प्रकाश दीक्षित

शिकोहाबाद के बीडीएम कन्या इंटर कालेज में श्रीमती जानकीदेवी बजाज की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला कई मायनों में एक महत्वपूर्ण आयोजन सिद्ध हुई। इस कालेज के अलावा नगर के यंगस्कालर्स एकेडमी की छात्राओं ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। टेलीफिल्म के माध्यम से जानकीदेवी बजाज के जीवन के त्याग और बलिदान को रेखांकित किया गया। फिल्म ने यह बताने का प्रयास भी किया कि जानकीदेवी ने नारी में शिक्षा का प्रसार, पर्दाप्रथा और दहेज उन्मूलन के साथ गौ सेवा के लिये जिस लगन से काम किया आज भी उतनी ही लगन से काम करने की आवश्यकता है।

खादी से प्रेम करना आज के राष्ट्रीय संदर्भों के लिये अतिमहत्वपूर्ण है, समारोह में छात्राओं की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने यह संदेश भी दिया। भाषण के रूप में छात्राओं के विचार भी ध्यान देने योग्य थे। बालिकाओं की भावना से पता चला कि उनमें इंदिरा गांधी और झांसी की रानी बनने की इच्छाशक्ति तो है, लेकिन कई रूढ़ियां और पारिवारिक–सामाजिक संकीर्णताएं उनके मार्ग को रोकती हैं। अगर उपयुक्त माहौल मिले तो वे

मंचासीन बांये से श्री साहित्य प्रकाश दीक्षित, श्री उमाशंकर शर्मा, डा0 महेश आलोक, डा0 रजनी यादव एवं डा0 सर्वेश कुमारी (प्रधानाध्यापिका, बी0डी0एम0 इण्टर कालेज)।

किसी से पीछे नहीं रहना चाहती हैं।

इस मौके पर नगर के बुद्धिजीवियों ने भी महिला शक्ति को अपनी पहचान बनाने तथा समाज में अपनी भूमिका मजबूत करने के लिये प्रोत्साहित किया। उन्होंने न केवल नारी के सामाजिक उत्थान की बात की, बल्कि उसे परिवार में भी सम्मानपूर्ण स्थान देने की वकालत की। इन वक्ताओं ने कहा कि आज ज़रूरत इस बात की है कि घर की पहली रोटी घर की लक्ष्मी को मिले, ऐसा करने से घर में बरकत आयेगी। कार्यक्रम के मध्य प्राप्त हुए शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज के अपने टेलीफोनिक संदेश ने उत्साह को बढ़ावा दिया। श्रीमती बजाज ने फोन लाइन के जरिये माइक्रोफोन पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि बालिकाएं अपने को किसी से कमज़ोर नहीं समझें, लेकिन चारित्रिक गुणों के विकास से ही उन्हें समाज में बल मिलेगा, यह ध्यान भी रखें। भाषण प्रतियोगिता निर्णायक मंडल के सदस्य थे श्री उमाशंकर शर्मा, डा. महेश आलोक और

विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह देते श्री उमाशंकर शर्मा।

साहित्य प्रकाश दीक्षित। डा. रजनी यादव, मंज़र उल–वासै के विचारों से बालिकाएं काफी प्रभावित हुईं।

कॉलेज की प्रधानाचार्या डा0 सर्वेश कुमारी ने स्वागत एवं धन्यवाद भाषण में शब्दम् एवं जमनालाल बजाज फाउन्डेशन का आभार प्रकट करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है, केवल किताबी ज्ञान सम्पूर्ण नहीं होता।

सरस्वती वंदना का नृत्य द्वारा प्रदर्शन करती स्कूली छात्रा।

प्रेरणादायी विचारों का श्रवण करती स्कूली छात्रायें।

लघु कहानीकारों से मिलिए।

- **कार्यक्रम विषयः** लघु कहानीकारों से मिलिए।
- **दिनांकः** 25 फरवरी, 2009 • **समयः** दोपहर 12 बजे से 3:30 बजे • **स्थानः** यंग स्कालर्स एकेडमी, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम् एवं यंग स्कालर्स एकेडमी, शिकोहाबाद
- **आमंत्रित कहानीकारः** श्री पुन्नी सिंह, शिवपुरी (म0प्र0) एवं श्री बलराम (दिल्ली)

उमाशंकर शर्मा की अध्यक्षता में ''लघु कहानीकारों से मिलिए'' कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

साहित्यिक विधाओं के आकार–प्रकार में युग के अनुरूप जो परिवर्तन हुए हैं, लघु कहानियों का जन्म भी वहीं से माना जा सकता है। लंबी चौड़ी कहानियां पढ़ने का वक्त अब पाठकों के पास नहीं है। पत्र–पत्रिकाओं में भी नित नयी सामग्री के समावेश ने प्रकाशकों के सामने स्थान के अभाव का संकट पैदा कर दिया है। ऐसे में लघुकथा की उपयोगिता की बात हर किसी की समझ में आती है। शब्दम् ने इसी समझ का परिचय देकर लघुकथा को उसके ही रचनाकारों के माध्यम से जनसामान्य से परिचित कराया। लघुकथा के शिल्प को समझने, उसे प्रोत्साहित करने तथा अधिकाधिक लोग उसके साहित्य में स्थान को पहचानें, कार्यक्रम ने अपने इस उद्देश्य में सफलता भी पायी।

दीप प्रज्वलन करते लघुकथाकारद्वय पुन्नी सिंह यादव, बलराम। साथ में है उमाशंकर शर्मा एवं अभय दीक्षित।

यंगस्कालर्स एकेडमी में आयोजित 'लघु कहानीकारों से मिलिये' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य की अनेक विधाओं के महारथी पुन्नी सिंह ने अपनी लघुकथाएं प्रस्तुत कीं तो जैसे इस युग की संवेदनाएं और सरोकार हाथ उठाकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगे। लघु कहानियों ने आम आदमी की दिनचर्या के बीच की मामूली सी प्रतीत होने वाली महत्वपूर्ण विसंगतियों को अपना निशाना बनाया और कभी सीधे–सीधे तो कभी व्यंग्यात्मक शैली में उस ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया।

शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य डा. महेश आलोक द्वारा कार्यक्रम की भूमिका के अंतर्गत कहे गये शब्दों से इस विधा के वर्तमान साहित्य में स्थान को समझा जा सकता है। उनका कहना था कि आज की भागदौड़ वाली दिनचर्या में

लघुकहानी ही गद्य की ऐसी विधा है जो आम आदमी के सबसे निकट जाने का प्रयास कर रही है। इसकी विषयवस्तु आमतौर पर रोजमर्रा की वे बातें हैं, जिनसे हर किसी को सामना करना पड़ता है और इसमें कथाक्रम के तमाम सोपान नहीं हैं। यह कहानी सीधे विषय को प्रतिपादित कर परिणाम तक पहुंचा देती है। लघुकथा की यही विशेषता है जो समीक्षक को सबसे पहले प्रभावित करती है। डा. आलोक ने कार्यक्रम में आमंत्रित कहानीकार पुन्नी सिंह और बलराम का परिचय भी दिया।

अखिल भारतीय गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार पाने वाले पुन्नी सिंह की लघु कहानी 'माँ और बेटा', 'मार मंदी की' तथा 'राज की बात' एवं बलराम की लघुकहानी 'ग्राहक', 'वह लड़की', 'लड़की की समझ', तथा 'दूसरी गुलामी' ने श्रोताओं को प्रभावित किया।

लघु कथा का प्रस्तुतिकरण श्री पुन्नी सिंह यादव द्वारा।

मंचासीन बांए से डा0 महेश आलोक, श्री बलराम, श्री उमाशंकर शर्मा एवं श्री पुन्नी सिंह यादव।

पुन्नी सिंह यादव

जन्मः 1 अगस्त, 1934 को उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले के मिलावली गाँव में।

प्रकाशित कृतियांः नाटक–रेजांगला एवं धनिया। कहानी संग्रह – 'काफ़िर तोता', 'जंगल का कोढ़', 'मोर्चा', 'जुम्मन मियां की घोड़ी,' 'नाग फांस', 'जुगलबंदी', 'कयामत का दिन', 'गोलियों की भाषा', 'काना कौआ'। उपन्यास – तिलचट्टे', 'पाथर घाटी का शोर', 'सहराना', तोर रूप गजब', 'त्रिया तीन जन्म', 'मंडली'; सेतुबंध', 'वह जो घाटी ने कहा',।

पुरस्कार व सम्मानः अखिल भारतीय गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार व म0प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'भवभूति अलंकरण'।

संप्रतिः म0प्र0 शासन के उच्च शिक्षा विभाग के प्राध्यापक पद से सेवानिवृत।

संपर्कः द एशिएन स्कूल, जसलई रोड, शिकोहाबाद उत्तर प्रदेश। मो. नं.–9410631974

श्री पुन्नी सिंह यादव की लघुकथाएं

मां और बेटा

माँ ने बेटे को बचपन से यह पाठ पढ़ाया था कि चाहे भूखा मर जाना लेकिन किसी की चोरी मत करना। बेटे ने बचपन से माँ का पाठ याद रखा था, लेकिन थोड़ा बड़ा हुआ तो सचमुच भूखे मरने की नौबत आ गई और वह माँ को बिना बताए शहर को भाग गया ।

शहर में वह एक तस्कर गैंग के हाथ लग गया और जम कर कमाई करने लगा। मालिक उससे खुश थे इसलिए शहर में उसने शानदार मकान बनवाया और सुख–सुविधा के सारे साधन जुटाए। तभी उसे अपनी माँ की याद आने लगी और एक दिन बड़े ठाट–बाट के साथ माँ को लेने गांव में जा पहुंचा ।

माँ ने उस का ठाट देखा तो देखती ही रह गयी। काफी देर तक बेटे से कुछ बोल नहीं पाई। उसका बेटा समझ गया कि माँ के गले में वही चोरी वाली बात अटकी हुई है। वह बोला– 'माँ ! तू चिंता मत कर तेरे सर की कसम, मैनें किसी की एक पैसे की भी चोरी नहीं की है ।'

'तो फिर तूने इतनी कमाई कैसे कर ली रे!' मां ने पूछा !

यह सुनकर बेटा हँसा और बोला – 'माँ तू तो बावरी है, भला बता तो चोरी से कोई लखपति बना है आज तक? यह तो मैंने तस्करी से हासिल किया।' सुनकर माँ बहुत खुश हुई अड़ोस–पड़ोस के लोगो को बता आई कि उसके बेटे ने चोरी नहीं की है वह तो तस्करी से लखपति बना है। काश! उस मां को तस्करी का भी अर्थ मालूम होता !

वह लड़की

लड़की सब्जी की दुकान के आगे खड़ी सब्जी ले रही थी और लड़का एकाएक वहाँ आ गया।

वह बोला – 'मैं भी तुम्हारी गली में ही रहता हूँ, बस दो घर आगे ! लड़की ने थोड़ा मुड़कर देखा और कहा – 'अच्छा तो ......' ।

लड़की फिर सब्जी छाँटने लगी ।

लड़के ने फिर गर्दन खुजलाई और फिर बोला – 'मेरी माँ को भी बैंगन बहुत अच्छे लगते है । ...... वे बैंगन का भुर्ता अच्छा बनाती है ।'

लड़की ने फिर से कनखी से देखा और कहा– 'अच्छा ! तो .... ' ।

इतना कह कर लड़की सब्जी तुलवाने लगी तो लड़का फिर बोला – 'मैं तुम्हारे कालेज में ही पढ़ता हूँ, बी.ए. में हूँ ।'

लड़की ने फिर उसे घूरा लेकिन अबकी बार कहा कुछ नहीं। सब्जी का झोला उठाकर जाने लगी।

अब लड़का फुदककर उसके पास आ गया और बोला – 'झोला भारी है ?

लाओ मैं इसे तुम्हारे घर तक ले चलता हूँ ।' लड़की चलते–चलते रुक गयी और बोली –'मेरे घर तक इसे पहुँचाने के कितने पैसे लोगे ?' सुनते ही लड़के पर घड़ों पानी पड़ गया । वह ठगा–सा बीच सड़क पर खड़ा रह गया।

और लड़की झोला लिए मचलती हुई चली गयी।

लोक रंग कार्यक्रम
(अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर)

- **कार्यक्रम विषयः** लोक रंग
- **दिनांकः**08 मार्च, 2009 ● **समयः** दोपहर 1:00 बजे से 3:30 बजे ● **स्थानः** यंग स्कालर्स एकेडमी, शिकोहाबाद ● **संयोजनः** शब्दम् एवं यंग स्कालर्स एकेडमी, शिकोहाबाद
- **आमंत्रित कविः** श्रीमती चेतना शर्मा– ब्रज, श्री प्रताप दीक्षित– भदावरी, श्री पवन बाथम–कन्नौजी, श्री फ़ारूक सरल– अवधी, श्रीमती प्रभा वैद्य 'विधु'– बुन्देली ।

आठ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'शब्दम्' एवं यंग स्कॉलर्स एकेडमी, शिकोहाबाद के संयुक्त तत्वावधान में लोक रंग काव्य समारोह का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश रत्न की उपाधि से सम्मानित उद्योगपति बालकृष्ण गुप्त ने 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता', के मंत्र वाक्य से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अन्य उपस्थित विद्वानों ने एक स्वर से नारियों के सम्मान और सुरक्षा की आवाज को बुलंद किया। चेतना शर्मा ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम में पांच कवियों – श्रीमती चेतना शर्मा (ब्रज), सुश्री प्रभा वैद्य 'विधु' (बुन्देली), श्री प्रताप दीक्षित (भदावरी), श्री पवन बाथम (कन्नौजी), श्री फ़ारूक़ सरल (अवधी) को आमंत्रित किया गया। उपर्युक्त कवियों द्वारा विभिन्न बोलियों पर कवितापाठ किया गया। आमंत्रित कवियों का स्वागत हरित कलश भेंट कर किया गया। काव्य पाठ के क्रम में प्रताप दीक्षित ने

उद्योगपति एवं हिन्दी सेवी श्री बालकृष्ण गुप्त द्वारा दीप प्रज्वलन।

ब्रज भाषा में अपनी रचना प्रस्तुत करती चेतना शर्मा।

अपनी कविताओं से गुदगुदाया। वहीं फ़ारूक सरल ने नारी चेतना की पारिवारिक पृष्ठभूमि को रेखांकित किया। इस क्रम की अगली हस्ताक्षर चेतना शर्मा ने 'चन्दन सी महकें जवानी, गोरी है गई सयानी' तथा प्रभा वैद्य ''विधु'' ने 'आज शपथ लेने हम सब खां, करके कुछ दिखाने है नारी के तीनों रूपन खां अब साकार बनाने हैं' आदि कविताओं का पाठ किया। पवन बाथम ने 'उठे पूरब से करिया पहाड़, गुइयाँ घर को चलो' के माध्यम से आंचलिक भाषा को अपने शब्द दिये। डा0 रजनी यादव ने किरण बजाज की कविता 'ओ नारी शक्ति तुम हो महान' का पाठ किया।

डा. ध्रुवेंद्र भदौरिया ने भी रचना प्रस्तुत कीं। यंग स्कालर्स के निदेशक डा0 ए0 के0 आहूजा ने स्वागत और आभार के शब्दों को व्यक्त किया।

मंच पर बायें से श्रीमती प्रभा वैद्य 'विधु' ,डा0 रजनी यादव, श्री फारूक सरल, श्री प्रताप दीक्षित, श्री उमाशंकर शर्मा, श्री पवन बाथम, डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डा0 ए0के0 आहूजा, श्रीमती चेतना शर्मा।

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान ।।

जेल मइंहा तसला बजैहौं (अवधी)

–फ़ारुक़ सरल

हमका बलम जो सतैहौं
तो जेल मइंहा तसला बजैहौं
दिल्ली, मुम्बई, पूना, पटना, चेन्नई या गोहाटी
मोटी, पतली, काली, गोरी, लम्बी हो या नाटी
कैसी भी हो छम्मक–छल्लो, छैल छबीली बाँकी
किसी कलमुहीं से भी तुमने जो की ताका–झाँकी
कहीं रात में जो नैना लड़इहौं
जेल....................................

जइसन कहीं, करौ तुम वइसन, रंग ढंग बदलो सइयाँ
मेरे साथ में ईलू–ईलू गाओ छइयाँ–छइयाँ
चौका बरतन करो सवेरे उठि के चाय बनाओ
पहले साड़ी प्रेस करो फिर बाद में दफ्तर जाओ
नाहीं मनिहौं कहा तो पछितैहौं
जेल....................................

अब लौ तोहरी बात सहेन अब हमारी लात सहौ तुम
हम दिन का जो रात कही तो वहिका रात कहौ तुम
धौंस देखइहौं तौ भर पइहौं थाने में रपट लिखैहौं
डावरी एक्ट, महिला–उत्पीड़न मा हम तोहै फसइहौं
छः महिना जमानत न पहिहौं।
जेल....................................

न्यायालय, अखबार, पुलिस, कानून, मीडिया जानै
नारी अबला उत्पीड़ित असहाय, दलित, जग, माने
को मानी जो हमरे ऊपर तुम आरोप लगइहौं
मेहरी लतियावति है यू तुम केहिसे जाय बतइहौ
कउन ढूंढ़े गवाही न पइहौं
जेल................................

फ़ारुक़ सरल
जन्मः 25 सितम्बर 1955 को सीतापुर (उ0प्र0) जनपद में। **शिक्षाः** स्नातक तक। कवि–सम्मेलन एवं मुशायरों के भारत व नेपाल में लोकप्रिय लोकगीतकार। सम्प्रति अध्यापक रहे हैं। देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन। गीत/लोकगीत संग्रह ''भोले–भाले गीत हमारे'' शीघ्र प्रकाश्य। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से नियमित रूप से प्रसारण।
संपर्कः 290, नौरंगाबाद लखीमपुर खीरी

गुइयाँ घर को चलौ (कन्नौजी)

—पवन बाथम

उठे पूरब से करिया पहाड़, गुइयाँ घर को चलौ।
द्वारे ठाड़ो है बैरी असाढ़, गुइयाँ घर को चलौ।।

अलसाए जोबन पै प्रीति की खुमारी।
तापै जा गदराई अमुवा की डारी।।
संयोगी सपनन को घूम रहो चरखा।
पाहुँन के बिछुमिन की पहली बरखा।।
आई नदिया निगोड़ी में बाढ़
......गुइयाँ घर को चलौ

कजरी के बोलन पै खनकें पायलिया।
बागन में हूक रही बौरी कोयलिया।।
गाल लाल—लाल भए झुकी—झुकी अंखियाँ।
ऐसी—वैसी बातन को पूछि रहीं सखियाँ।।
खैर—खबरन की लै—लै के आड़..
.......गुइयाँ घर को चलौ

लगती हैं जहर बुझी उपदेसी वानी।
अमृत घट छलकाती भोग की कहानी।।

पछितायी प्रीतम को झुरमुट में लाइकै।
बढ़े—चढ़े जोवन को नैनन सों आँके।।
बैरी तिल को बनाए रहो ताड़....
......गुइयाँ घर को चलौ

पवन बाथम

जन्मः 3 दिसम्बर 1950। **शिक्षाः** अंग्रेजी से परास्नातक।
गीतों के कथ्य और शिल्प दोनों में अपनी विशिष्टता की छाप। कन्नौजी भाषा के लोकप्रिय कवि। 30 वर्षों से काव्यमंचों पर सक्रिय।
प्रकाशनः गीत संग्रह—''धीरे—धीरे बरस''। इनकी रचनाएं ''फर्रूखाबाद के प्रतिनिधि कवि'' ''दूसरी पीढ़ी के प्रेम गीत'' में भी संकलित हैं।
पुरस्कार व सम्मानःविवेक श्री, गीत चांदनी जयपुर का गीत रत्न, गोपाल सिंह नेपाली सम्मान तथा अखिल भारतीय मंचीय कवि परिषद द्वारा बलबीर सिंह रंग सम्मान।
संपर्कः पटवन गली, कायमगंज (फरूखाबाद) मो. नं. 09450102678

गोरी है गयी सयानी (ब्रज)

—चेतना शर्मा

चन्दन सी महकै जवानी, गोरी है गयी सयानी।
कोयल सी मीठी है वानी, गोरी है गयी सयानी।

बड़े—बड़े दो नयना तीखे
कजरा बिना कटार सरीखे
जापै बिजुरिया सयानी
..........गोरी है गयी सयानी।

भोरौ—भोरौ गोरौ चेहरा
गाल पै काटे तिल कौ पहरा
अधरा गुलाबी रसखानी
..........गोरी है गयी सयानी।

रति नै रूप निखारौ ऐसो
जोवन चढ़ते वरिया जैसो
जापै उफन रयौ पानी
..........गोरी है गयी सयानी।

चक्कर काटै चेवरा व्याकुल
कली फूल बनिवै कूं व्याकुल
मागौ जिया गुरधानी
..........गोरी है गयी सयानी।

चेतना शर्मा

जन्मः 1—9—1962 डिवाई (बुलन्दशहर) में
शिक्षाःएम. ए. (राजनीतिशास्त्र, इतिहास) बी.लिब. साइन्स।
विगत 23 वर्षों से कविता के क्षेत्र में सक्रिय। आकाशवाणी, दूरदर्शन से रचनाएं प्रसारित। अनेकों पत्र—पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित।
संपर्कःजी.70, फेस ट्रांस यमुना कालोनी, आगरा
मो. नं.: 09412170670, 09319165244

सुनौ तुम्हाई अम्मा नें (भदावरी)

–प्रताप दीक्षित

जी भर हम कों खूब सताओ–
सुनौ तुम्हाई अम्मा नें।
घर को बंटाढार कराओ
सुनौ तुम्हाई अम्मा नें।

जा दिन पक्की भई सगाई।
डलिया भर ले गये मिठाई।
एक लाख कल्दार गिनाये।
चच्चा लुटे–लुटे घर आये।
तोऊ ऊधम खूब मचाओ–
सुनौ तुमाई अम्मा नें।

कहें गाँव के लोग–लुगाई।
साड़ी भेजी धरी–धराई।
नहीं पठाई सारा–जोड़ी।
हँसी उड़ायें मोड़ा–मोड़ी।
ऐसो नंगो नाच नचाओ–
सुनौ तुम्हाई अम्मा नें।

जब–जब मेरो भैया आबे।
तब–तब उनको मूड़ पिराबे।
घर पै मेरी मैय्या रोये।
फटफटिया के कारण मोये
तीन साल तक नहीं पठाओ–
सुनौ तुम्हाई अम्मा नें।

बिना बात के टोका–टाकी।
कोऊ कसर ने छोड़ी बाकी।
जब–जब उनको भैय्या आवे।
झोरा भर–भर के लै जाबे।
लेकिन हमकों चोर बताओ–
सुनौ तुम्हाई अम्मा नें।

सीधे–साधे ससुर हमारे।
बोलत नाँहि डरन के मारे।
सास दहाड़े सिंहिन बन के।
जैसें निकरे दूध उफन कें
सुझझे डोरा कों उझझाओ–
सुनौ तुम्हाई अम्मा नें।

भोर को सूरज ल्याने हैं (बुन्देली)

–प्रभा वैद्य ''विधु''

आज शपथ लेने हम सब खां, करके कछु दिखाने हैं,
नारी के तीनऊं रूपन खां, अब साकार बनाने हैं,
दुर्गा की शक्ति हम लो है, समृद्धि लक्ष्मी सी,
सुरसती को रूप बनाकें, बनहें पद्‌मश्री सी
अंधियारन से लड़कें अब तो, भोर को सूरज ल्याने हैं।

छन्द

बुन्देलखंड धरा वीरन की रई है सदा
इते जनम लेत रये वीर महाबली हैं।
जिनके अंगारू हारे सवई अतिताई शत्रु
जब किरपान मूड काटवे खां चली है।
आन,वान,शान और वीरता को मिलो पाठ
हर संतान पूतें वीरता में पली है।
छत्रसाल और आल्हा ऊदल से वीर रये
इतई रई वा तो झांसी वाली लली है।

प्रभा वैद्य ''विधु''
जन्मः 01.09.1959 ग्राम व पोस्ट मऊसहानियां जिला छतरपुर मध्य प्रदेश **शिक्षाः** एम.कॉम एवं एम.ए. समाजशास्त्र
सम्प्रतिः शाखा प्रबंधक को–आपरेटिव बैंक, छतरपुर। काव्य रचना– हिन्दी एवं बुन्देली छन्द, गीत, गजल, एवं मुक्तक लेखन।
सम्मानः अखिल भारतीय हिन्दी, उर्दू प्रचार–प्रसार समिति कालपी द्वारा मीराबाई सम्मान एवं जिला क्षत्रिय समाज छतरपुर द्वारा साहित्य द्वारा साहित्य सम्मान। प्रकाशन– प्रधान सम्मादक वार्षिक पत्रिका ''अपना जहां''
संपर्कः ग्रा0+पो0– मऊसहानियां जिला छतरपुर(म0प्र0)

प्रताप दीक्षित
जन्मः 7 जनवरी, 1932 ग्राम–परा, जिला–भिण्ड (म0 प्र0) में
प्रकाशित रचनाएं–बाँसों के वन, अंजुरी भर बाजरा, हमाई बोली हमारे गीत (काव्य संग्रह) 'विवरणिका' मासिक पत्रिका– दूर संचार विभाग, आगरा का कई वर्ष तक संपादन।
सम्मानः नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा, अ. भा. मीरा साहित्य संगम धौलपुर, डॉ0 कमलेश स्मृति प्रकाशन संस्थान आगरा, भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर, संस्कार भारती आगरा, कविरत्न सत्य नारायण स्मृति संस्थान, तोरा आगरा, आदि में सार्वजनिक सम्मान।
विधाः छंद, गीत, गज़ल, दोहा, व्यंग्य–गीत, मुक्त छंद, लेख, ब्रजभाषा आदि में साधिकार लेखन।
सम्प्रतिः स्वतंत्र लेखन काव्य, स्वाध्याय कवि सम्मेलन, काव्य गोष्ठियों में नियमित सक्रियता।

ओ नारी शक्ति, तुम हो महान (हिन्दी)

–किरण बजाज

ओ नारी शक्ति, तुम हो महान
ओ नारी शक्ति, तुम हो महान
प्रथम गुरू जननी, बेटी, बहु, भगिनि
हर घर की तुम हो अनुपम शान।
दया–क्षमा, और प्रेरणा
तुम धैर्य–मूर्ति साहस की खान।
कोमल–प्रेमल और विनम्रता
उन्नत है तुम्हारा स्वाभिमान
सेवारत मीठी मुस्कान
लिखती हो जीवन का गान।
जितनी अनुरागी हो, उतनी ही त्यागी तुम
तुमने ही की है धरती को सुषमा प्रदान।
तुमसे ही आशा है, भटकी मानवता को
संस्कार–शिक्षण दो, विश्व का करो कल्याण
हे नारी शक्ति तुम हो महान
हे नारी शक्ति तुम हो महान
हे नारी शक्ति तुम को प्रणाम।

रामनवमी महोत्सव

- **कार्यक्रम विषयः** रामनवमी महोत्सव
- **दिनांकः** 3 अप्रैल, 2009 • **समयः** सायं 7:30 से 9:00 बजे तक
- **स्थानः** श्रीसिद्धेश्वर नाथ मंदिर, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रितः** श्रीराम संगीत विद्यालय शिकोहाबाद के स्थानीय कलाकार।

श्रीराम के जीवन चरित पर विचार व्यक्त करतीं श्रीमती किरण बजाज।

कलाकार का सम्मान डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया।

मंच पर आसीन श्रीराम संगीत विद्यालय के कलाकार।

रामभजन सुनतीं महिला श्रोतागण।

'संस्कृति एवं प्रकृति' विचार मंथन कार्यशाला

- **कार्यक्रम विषयः** संस्कृति एवं प्रकृति विचार मंथन कार्यशाला
- **दिनांकः**12 अप्रैल, 2009 ● **समयः** प्रातः 10:00 बजे से 5:00 बजे तक ● **स्थानः** स्टाफ क्लब सभागार हिन्द परिसर, शिकोहाबाद ● **संयोजनः** शब्दम्, शिकोहाबाद
- **प्रतिभागीः** अन्तर्स्नातक, स्नातकस्तरीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रबंधक एवं प्रधानाध्यापक गण, सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार

कार्यशाला पूरे दिन चली। यहां उपस्थित मानस अर्थात आमंत्रित लोगों में मुख्य रूप से विद्यालयों के प्रबंधक और प्रधानाध्यापक शामिल थे लेकिन पत्रकार आदि कई बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। इनमें से हर एक अपने आप में जीवन और अनुभवों के एक महत्वपूर्ण पड़ाव से कम न था लेकिन कार्यक्रम को एक पड़ाव तक ही सीमित न रहना था। पूरी मंजिल पार करनी थी। उपस्थित लोगों ने मंजिल पाने की ललक तो दिखाई, लेकिन उनमें जोश भरने का काम किया शब्दम की अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज ने।

मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्वलन के द्वारा श्रीमती बजाज ने कार्यशाला का शुभारंभ करते ही मानस के भाव को भांप लिया। उन्होंने अपने विस्तृत संबोधन में बार–बार उस मानस की जड़ता को कुरेदा, चिंता प्रकट की और यहां तक कि हल्के फुल्के प्रहार भी कर डाले। उन्हीं के शब्दों में– ओफ, बेरहम सभ्यता ! कौन कहता है इसे सभ्य? कंक्रीट के जंगल उगाने वाले और प्रदूषित नदियों का छना हुआ पानी पीने वाले लोगों को क्यों कोई

मंचासीन बांये से डा0 रजनी यादव, डा0 ए0के0 आहूजा, श्रीमती किरण बजाज, श्री उमाशंकर शर्मा, श्री मंजर उल–वासै।

मार्ग दिखाई नहीं देता है..। ..संसार की सर्वोत्तम संस्कृति वाले देश में जन्म लेने वालों को जागना होगा। विश्व की अप्रतिम प्राकृतिक छटा रखने वाले देश तुम्हें फिर से अपनी नैसर्गिकता के साथ उठ खड़ा होना होगा।

अध्यक्ष के संबोधन के बाद नवोदय विद्यालय की प्राचार्या डा. सुमनलता द्विवेदी ने मानस की चौपाइयों और संदर्भों के माध्यम से प्रकृति और संस्कृति का सजीव चित्रण करते हुए यह भाव प्रदान किया कि यह तस्वीर जो आज भयावह हो गयी है एक समय कितनी सुंदर और स्निग्ध थी। उनके स्वर में स्वर मिलाया शब्दम के वरिष्ठ सलाहकार उमाशंकर शर्मा, डा0 ए0के0 आहूजा, डा. रजनी यादव, एजूकेशनल काउंसलर डा0 सुरेश आहूजा, बी0एम0 भारद्वाज जैसे विद्वानों ने। इन सब ने संस्कृति और प्रकृति के प्रति अपने सरोकारों की बानगी पेश की। साथ ही इस बात पर जोर दिया कि ऐसे आयोजनों की निरंतरता ही प्रकृति को बचा सकती है और संस्कृति का संरक्षण कर सकती है। इस संबंध में शब्दम सलाहकार मंडल के युवा सदस्य मुकेश मणिकांचन ने विचारों के विनिमय के साथ संस्कृति और प्रकृति के संरक्षण के लिये योजनाबद्ध ढंग से काम करने की बात जोरदारी के साथ रखी। वहीं नये विचारों के धनी राजेंद्र यादव ने साहित्य की धरोहरों के खोते जाने पर मार्मिक चिंता प्रकट की। अंत में सभी की सहमति इस बात पर बनी कि कार्यक्रमों की निरंतरता रखी जाये। इसके साथ ही लोग काम करने में जुटें।

कार्यशाला में विचार मग्न सुधी विद्वान श्रोता।

सुगम संगीत गायन प्रतियोगिता

- **कार्यक्रम विषयः** सुगम संगीत गायन प्रतियोगिता
- **दिनांकः**17 अप्रैल, 2009 • **समयः** सायं 06:00 बजे से 8:00 बजे तक • **स्थानः** स्टाफ क्लब सभागार, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम्, शिकोहाबाद
- **प्रतिभागीः** शिकोहाबाद एवं सिरसागंज के विद्यालयों के चयनित छात्र–छात्रायें।

प्रारम्भ से ही छात्र–छात्राओं में संगीत के प्रति संवेदनशीलता लाने के लिए संस्था ने कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के आयोजन की श्रृंखला में 17 अप्रैल, 2009 को सुगम संगीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया, नगर एवं सिरसागंज के विद्यालयों के संगीत में रुचि लेने वाले छात्र–छात्राएं प्रतिभाग किये। प्रतियोगिता में कुल 23 विद्यालयों के बच्चे भाग लिए। ज्ञानज्योति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की कक्षा नवीं की छात्रा पूनम को प्रथम पुरस्कार, मधुमाहेश्वरी विद्या मंदिर की कक्षा 7वीं की छात्रा पीयूषी पालीवाल एवं ज्ञानदीप की कक्षा 6वीं की छात्रा मानसी सिंह को द्वितीय पुरस्कार एवं ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी

श्रीमती विमलादेवी बजाज को श्रद्धा के पुष्प समर्पित करतीं श्रीमती किरण बजाज व कु0 गीतिका बजाज।

सिरसागंज की कक्षा 7वीं की छात्रा अन्वेषा एवं सरस्वती शिशु मंदिर के कक्षा 7वीं के छात्र विपिन जैन को तृतीय पुरस्कार, श्रीमती किरण बजाज, डॉ0 रजनी यादव एवं निर्णायक मंडल के

श्रीमती विमलादेवी संगीतालय में भजन करतीं हिन्द आवासीय कालौनी की महिलायें।

सदस्यगण डॉ0 विनीता सक्सेना, डॉ0 चन्द्रा सिंह चौहान एवं डॉ0 पी0 सी0 कुशवाहा ने संयुक्त रूप से दिया।

इस अवसर पर श्रीमती किरण बजाज ने कहा कि ''प्रतियोगिताओं के आयोजन से छात्र–छात्राओं के प्रतिभा की परख, रुचि व उन्नयन के साथ, उनका सर्वांगीण विकास भी होगा।''

निर्णायक मण्डल के सदस्य डॉ0 पी0 सी0 कुशवाहा, संगीत विभागाध्यक्ष, चित्रगुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय ने कहा कि ''शब्दम् की ओर से ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजन से संगीत की प्रतिभाओं को पहचानने का अवसर मिलेगा साथ ही उन बाल कलाकारों में आत्मविश्वास पैदा करने में ऐसे आयोजन सहायक सिद्ध होंगे। उन्होंने संस्था की भूरि–भूरि प्रशंसा की।''

उपरोक्त विजेता प्रतिभागियों के अतिरिक्त निम्नांकित ने भी भाग लिया–

अमनदीप– ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, अम्बिका– न्यूगार्डनिया पब्लिक स्कूल, अनुशा चंदेल– नव जागृति पब्लिक स्कूल, अर्चना–यंगस्कालर्स अकेडमी, अवन्तिका सिंह –शिकोहाबाद पब्लिक स्कूल, बबिता –सरस्वती शिशु मंदिर (प्राथमिक), नितिन दीक्षित –सरस्वती विद्या मंदिर, चेतन अग्रवाल– सरस्वती शिशु मंदिर (माध्यमिक), चित्रांश –लार्ड कृश्णा पब्लिक स्कूल, गजाला– न्यू गार्डनिया पब्लिक स्कूल, लवी पचौरी– बी0डी0एम0 कन्या इण्टर कालेज, निश्ठा चाक– नव जागृति पब्लिक स्कूल, पल्लवी– यंगस्कालर्स अकेडमी, पूजा– चंदेल मधु माहेश्वरी विद्या मंदिर, प्रीति –शिकोहाबाद पब्लिक स्कूल, स्वेच्छा यादव –ब्राइट स्कालर्स एकेडमी सिरसागंज, श्वेता– सरस्वती शिशु मंदिर (प्राथमिक), शिवानी ठाकुर– पुरातन सरस्वती विद्या मंदिर।

विजयी छात्राओं के साथ श्रीमती किरण बजाज, डा0 रजनी यादव व निर्णायक मण्डल के सदस्य।

ग्रामीण काव्य समारोह

- **कार्यक्रम विषयः** ग्रामीण काव्य समारोह
- **दिनांकः**14 जून, 2009 • **समयः** प्रातः 10:00 बजे से 3:30 बजे तक **स्थानः** प्यारेलाल– जीवाराम की ठार (बगिया) बनीपुर, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम्, शिकोहाबाद
- **आमंत्रित कविः** उदय प्रताप सिंह, श्री विश्वनाथ द्विवेदी, श्री राजकुमार 'रंजन', श्री पदम अलबेला, श्री बलराम 'सरस',श्री जयेन्द्र पाण्डेय 'लल्ला', डॉ ध्रुवेन्द्र भदौरिया।

यह गांवों की उर्वर भूमि क्यों न हिन्दी भाषा और साहित्य के लालन–पालन का स्थल बने, शब्दम ने इस सोच को प्रमुखता से अपनी क्रियान्वयन सूची में शामिल किया है। ग्राम्य कवि सम्मेलन के माध्यम से समय–समय पर संस्था द्वारा गांवों की अमराइयों के बीच कविता का बिगुल फूंकने का काम किया जाता है। इस बार गांव बनीपुर की माटी गवाह बनी। जेठ की दोपहरी में हरे पेड़ों की छांह के बीच कविता ने किलोल की तो आसपास का जनमानस अपने जरूरी कामों को छोड़ उस तरफ दौड़ चला। यह कवि सम्मेलन खासतौर से पर्यावरण, दहेज विरोध, नारी उत्थान, पाखंड समाप्ति जैसे कुछ विषयों को केंद्रित करते हुए आयोजित किया गया था।

गांव में कविता कहने का अपना अलग ही अनुभव है। सुनाने वालों के लिये भी और सुनने वालों के लिये भी। इस अनुभव के अंतर्गत मासूम श्रोताओं की भंगिमाएं या फिर कवि को मिला एक अनोखा माहौल दोनों की तरफ से एक अलग तरह के काव्यरस को निःसृत करता है।

ग्रामीणों के बीच अपनी रचना प्रस्तुत करते जयेन्द्र पाण्डेय 'लल्ला'।

इस समारोह में शब्दम् के चिरपरिचित साथी–सहयोगियों के अलावा बाहर के कवि एवं गांवों के तमाम लोग अमराई की छांह तले एक दूसरे के मिलन के साक्षी बने। वरिष्ठ कवि उदयप्रताप सिंह ने तो मंच से यहां तक कहा कि ऐसे कार्यक्रमों पर लाखों के कविसम्मेलन को न्यौछावर कर दिया जाये तो अधिक नहीं। उन्होंने शब्दम के इस समारोह में गांव वालों के सहयोग और व्यवस्थाओं को गांव की नैसर्गिकता से जोड़ते हुए पर्यावरण मित्र संस्था का स्मरण भी किया। साथ ही पर्यावरण की आवश्यकताओं और

ग्रामीणों के बीच अपनी रचना प्रस्तुत करते श्री मुकेश मणिकान्चन।

उसमें गांव की माटी के महती योगदान को भी रेखांकित किया। मंज़र उल वासै ने 'शब्दम्' और श्रीमती किरण बजाज का परिचय दिया। डा. रजनी यादव ने पर्यावरण मित्र का परिचय दिया।

कविता के नाम से ही उत्सुक हो रहे श्रोताओं को गीतकार राजकुमार रंजन के गीत, "एक नया युद्ध करें पर्यावरण शुद्ध करें" ने पर्यावरण मित्र के आह्वान में शामिल करने का काम किया। व्यंग्यकार जयेंद्र पांडे 'लल्ला' ने हंसाते हुए यथार्थ के धरातल तक ले जाने का काम किया। ओज कवि बलराम सरस की कविता ने बुजर्गों के प्रति प्रेम और आदर की भावना जगाने का काम किया।

'उनकी नजरिया मेरे गांव को लगी', रचना भी भावोद्दीपक रही। कवि और शब्दम् सलाहकार समिति के युवा सदस्य मुकेश मणिकांचन ने गाँव की माटी की ओजस्विता को प्रणाम करते हुए नैतिकता और मर्यादा के क्षरण पर काव्यपाठ किया।

ओजस्वी कवि विश्वनाथ द्विवेदी ने शब्दम के अभियान को सराहते हुए अपनी कविता के माध्यम से उसके स्वर में स्वर मिलाया, "हिन्दी ने सब बोलियों–भाषाओं का वन्दन किया, हिन्दी ने हर वर्ग के वीरों का अभिनन्दन किया"। हास्य कवि

काव्यरस की फुहार के साथ गणमान्य श्रोतागण।

पदम् अलबेला ने नये पुराने फिल्मी गानों की धुन पर आधारित कविताएं सुनाकर श्रोताओं को हास्य में गोते लगवाये। समारोह पूर्णाहुति की उदयप्रताप सिंह ने। उन्होंने अपने काव्य पाठ में "एक नव वाटिका में एक था कपोत युग्म कोई परवाह न थी, चाह न थी दुविधा, असुविधा में विचारों में सोचता हूँ थोड़ी देर दुनिया से दूर पंछी होना मेरे भी अधिकार में"। संचालन करते हुए डा. ध्रुवेंद्र भदौरिया ने भी काव्यपाठ किया। समारोह में कवियों ने तो गांव वालों को अपनी वाणी के जादू में बांधा ही, गांव वालों ने भी अपने अपने स्वागत से सभी को मोह लिया।

मेरे साथ

—विश्वनाथ द्विवेदी

मैं युग के पैरों से अपने पैर ना बाँधूंगा,
जिसको चलना है वह आकर मेरे साथ चले।

अब तक मैंने खुशियों की पालकी उठाई है,
जानबूझकर दुनिया भर की पीर कमाई है।
मुझे पता जग में मेरा कोई हम हमदर्द नहीं,
लेकिन अब मैं, सह पाऊँगा इतना दर्द नहीं
मैं सूरज हूँ तम से मैने हार न मानी है,
जिसको जलना है वह आकर मेरे साथ जले।

मन का राजकुमार प्यार का मूक भिखारी हूँ।
सच्ची मानवता का मैं सच्चा अधिकारी हूँ।
मेरी मजबूरी है कि मैं यह जीवन जीता हूँ।
गीत बेचकर मैं सागर से आँसू पीता हूँ।

मैं गिरि हूँ घाटी को अपना सिर न झुकाऊँगा,
जिसको गलना हो वह आकर मेरे साथ गले।
स्नेहाशीषों की अपार थाती धन है मेरा,
सदा समर्पित राष्ट्र वन्दना को मन है मेरा।
सुधियों में प्राणों में युग की पीड़ा भरता हूँ
संस्कृति के गिरते मूल्य की रक्षा करता हूँ

वाणी चिन्तन की भट्ठी में ढल कर आई है,
जिसको ढलना हो वह आकर मेरे साथ ढले।

ग्रामीणों के बीच अपनी रचना प्रस्तुत करते श्री विश्वनाथ द्विवेदी।

विश्वनाथ द्विवेदी

जन्मः 15 मई 1942 सराय सुन्दर, पो0 अकबरपुर, तह0 छिवरामऊ जनपद कन्नौज (उ0प्र0)

शिक्षाः एम0 ए0 (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, राजनीति)

सम्मानः राष्ट्र कवि दिनकर सम्मान, सोहनलाल द्विवेदी सम्मान, चन्दवरदाई सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, रंग स्मृति सम्मान, माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति सम्मान, सहित्य गौरव सम्मान, शहीद स्मृति सम्मान, भगत सिंह स्मृति सम्मान, मानस संगम सम्मान इत्यादि।

प्रकाशित कृतियांः गीत मीत के (काव्य संकलन), महाप्रयाग (खण्डकाव्य), भारत माँ बाँझ नहीं होगी (शहीदों की गाथायें), शीशे के शहर में (ग़ज़ल संग्रह), अधरों पर अक्षर (दोहा संग्रह), झील के सपने (नयी कविता संग्रह), वामन हुआ विराट (प्रबन्ध काव्य)।
सवेरा होने दो (गीत संग्रह), आत्मकथा, लघुकथा संग्रह, ललित निबंध।

सम्पर्कः मकरकन्दनगर, सरायसुन्दर पो0 अकबरपुर, आनन्द बुक डिपो सकरावा, कन्नौज दूरभाष– 9450482346

दानवी दहेज

—बलराम सिंह 'सरस'

भूखे भेड़ियों की भांति लोभियों ने आजकल,
जरिया बना लिया है धन का दहेज को।
होता अनजान तन मन का मिलन जहाँ,
दुल्हों ने बना दिया है कत्लगाह सेज को।
धन की डिमांड और मारपीट डायबोर्स,
लील रहे रोज–रोज बेटियों के तेज को।
लाइलाज हो न पाए कोढ़ जो बना हुआ है,
साथियो मिटाओ मिल दानवी दहेज को।

बलराम सिंह 'सरस'

शिक्षाः एम. ए. (हिन्दी) बी.एड.

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन एवं कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ। प्रकाशन–''भावनाओं के समन्दर में'', ''कल का आदमी'' सम्पादक–अनुपम, पंखुड़ियाँ, काव्यधारा

सम्प्रति–लेखाकार, डाकविभाग

संपर्कः शुभ्रा सदन, 155 सन्तोष नगर, रेलवे रोड, एटा।

पड़िया बनाम बिटिया

–जयेन्द्र पाण्डेय 'लल्ला'

बनवारी की भैंस ने जब पड़िया जनी
तो उसके घर कई दिन तक खुशियाँ मनीं
मगर कुछ दिनों बाद बनवारी की घरवाली ने
जब एक बिटिया को जन्म दिया
तो उसने अपना माथा पीट लिया
मेरी समझ में ये विसंगति नहीं आई
कि एक इंसान को अपनी पुत्री से
अधिक भैंस की पुत्री क्यों भाई
मुझसे रहा नहीं गया यानि कि एक आदमी का
आदमी से अधिक पशुप्रेम नहीं सहा गया
मैने अपनी शंका बनवारी के सामने धर दी
वह बोला–"बाबूजी! आपने तो हद कर दी।"
आप इतना भी नहीं जानते और जानें भी तो कैसे
आप जैसा व्यक्ति जो सिर्फ दो बेटों का बाप है
वह क्या जाने कि इस समाज में
एक गरीब के बेटी होना अभिशाप है।
मेरी पड़िया' काली जरूर है लेकिन उसका भविष्य
मेरे लिये दूध की तरह उज्जवल है।
और दूध सी उजली मेरी बिटिया का भविष्य काला है।
यूँ दोनों का एक ही भगवान रखवाला है।
मगर जब ये पड़िया बड़ी होगी तो मेरे आँगन में
भैंस बनी दूध देती और चारों पांवों पर खड़ी होगी
और जब ये बिटिया बड़ी होगी तो मुझे भटकना पड़ेगा।
गाँव दर गाँव ढूंढने पड़ेंगे
इस दोपायी के लिए दो और पाँव
और इन दो पावों को ढूंढने में मुझे
क्या–क्या नहीं करना पड़ेगा।
न जाने कितने पांवों पर पड़ना पढ़ेगा
मुझसे कहा नहीं जाएगा
आप बस इतना समझ लें कि
आँगन में बँधी में भैंस को दुहूँगा
और बाहर किसी महाजन द्वारा मुझे दुहा जाएगा।

संपर्क: 131, मिश्राना, मैनपुरी मो. नं. 983709504

फूल और कली

–उदय प्रताप सिंह

फूल से बोली कली क्यों व्यस्त मुरझाने में है
फायदा क्या गंध और मकरंद बिखराने में है?
तुमने अपनी उम्र क्यों वातावरण में घोल दी
अपनी मनमोहक पंखुड़ियों की छटा क्यों खोल दी?

तू स्वयं को बांटता है जिस घड़ी से तू खिला
किन्तु इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला?
मुझको देखो मेरी सब खुशबू मुझी में बन्द है
मेरी सुन्दरता है अक्षय, अनछुआ मकरन्द है।

चार दिन की जिन्दगी खुद को जिए तो क्या जिए
बात तो तब है कि जब मर जायें औरों के लिए
प्यार के व्यापार का क्रम अन्यथा होता नहीं
वह कभी पाता नहीं है, जो कभी खोता नहीं।

टूटे मन वाले कलेजे से लगायेंगे तुम्हें
मन्दिरों के देवता सर पर चढाएंगे तुम्हें
गंध उपवन की विरासत है इसे संचित न कर
बांटने के सुख से अपने आप को वंचित न कर
यदि सँजोने का मजा कुछ है तो बिखराने में है
जिन्दगी की सार्थकता बीज बन जाने में है
दूसरे दिन मैने देखा कि वो कली खिलने लगी
शक्ल–सूरत में बहुत कुछ फूल से मिलने लगे।

माली तुम्हीं फैसला कर दो

सुनते हैं पहले उपवन में हर ऋतु में बहार गाती थी
कलियों का तो कहना ही क्या, मिट्टी से खुशबू आती थी
यह भी ज्ञात हमें उपवन में कुछ ऐसे भौरें आये थे
सारा चमन कर दिया मरघट अपने साथ ज़हर लाये थे।

मुक्तक

नन्हीं कली फूल से बोली तू बुज़दिल है
वरना इन भौरों से बचना क्या मुश्किल है
सुनकर फूल हँसा, फिर बोला ओ अज्ञानी
भौरों का आना ही जीवन की मंजिल है।

एक सदी

एक सदी बीत गई है
स्वप्न–ध्वंस होते–होते।

केशरिया केशरिया था
तानाबाना प्राणों का
प्रस्तुत सायास समर्पण
देह में धंसे हाड़ों का
एकसदी बीत गई है
क्रांति मंत्र खोते–खोते।

दहन हुये घर के गौरव
बहन–बहू–बेटी–माँयें
काट–काट बोटी–बोटी
करते गौरव यात्राएँ
एक सदी बीत गई
यह कलंक ढोते–ढोते।

कहर है बड़े–बूढ़ों का
अपने ही घर में टूटा
है अपंग अगली पीढ़ी
भाग्य का विधाता रूठा
एक सदी बीत गयी है
कंस–वंश बोते–बोते।

एक नया युद्ध करें

एक नया युद्ध करें
पर्यावरण शुद्ध करें
पेड़ उगें हरे–हरे
बाग लगें भरे–भरे
नई द्रुम–तलाएँ हों
महकती हवाएँ हों
गाँव–गॉव, नगर–नगर
स्वच्छ कर विशुद्ध करें
कोलाहल दूर रहे
हलचल भरपूर रहे
अति विनम्र भाषा हो
शान्ति की पताका हो
शोर बहुल यंत्रों से
प्रकृति को न क्रुद्ध करें।
जल प्रपात निर्मल हो
नदियों की कल–कल हो
मल से जल कुन्द न हो
जीवन–गति मंद न हो
अपनी विषवेलों से
स्वयं को न रूद्ध करें।
आओ सब मिल–जुलकर
काम करें हिल–मिलकर
मन को कर निर्विकार
कर लें साक्षात्कार
निजता को त्याग आज
तन–मन को बुद्ध करें।

डा0 राजकुमार रंजन
शिक्षाः एम.ए. (हिन्दी), पी–एच. डी., बी.एड.,डिप्लोमा इन योग, पी.जी. डिप्लोमा जनसंचार।
प्रकाशन–'अमर सुभाष','ब्रजगंधा ,'प्रेरणा के स्वर', 'चंदनियां धूप' एवं 'सूर्यपथ से। सम्मान–अम्बेडकर विश्वविद्यालय के 'सूरपीठ' द्वारा 'ब्रजभाषा विभूति', अखिल भारतीय मीरा साहित्य संगम राजस्थान द्वारा 'सहस्राब्दि युगबोध पुरस्कार।'
संपर्कः 59/12बी–2 (सी–32) अजीत नगर गेट आगरा।
मो. नं. 9837425270, 0992262057, 9637841312 ।

स्पिक मैके के सहयोग से उस्ताद मुमताज हुसैन खान द्वारा "आजादी की शहनाई" की प्रस्तुति

- **कार्यक्रम विषयः** शहनाई वादन, स्पिक मैके के सहयोग से
- **दिनांकः** 15 अगस्त 2009 • **समयः** प्रातः 9:00 बजे से 2:00 तक • **स्थानः** ज्ञानदीप सी0 से0 स्कूल शिकोहाबाद, इन्दिरा मेमोरियल पब्लिक स्कूल सिरसागंज एवं स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद
- **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके
- **आमंत्रित कलाकारः** उस्ताद मुमताज हुसैन खान (शहनाई वादक) एवं साथी कलाकार।

शहनाई ने बिखेरे आजादी के तराने

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले, शहनाई की धुनों से राष्ट्रीय एकता का संदेश देने वाले शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खान के भांजे उस्ताद मुमताज हुसैन खान ने आजादी दिवस पर ज्ञानदीप सी0 से0 पब्लिक स्कूल शिकोहाबाद एवं इन्दिरा मेमोरियल पब्लिक स्कूल सिरसागंज में जब आजादी के तराने बिखेरे तो उपरोक्त विद्यालयों के छात्रों ने अपनी तालियों की संगत देकर शहनाई की धुनों को और मधुर बना दिया। अवसर था स्वतंत्रता दिवस यानि 15 अगस्त, 2009। प्रातः 9:00 बजे से लेकर अपरान्ह 2:00 तक शिकोहाबाद एवं सिरसागंज के उपरोक्त विद्यालयों एवं गणमान्य नागरिकों ने शहनाई की धुनों का भरपूर आनन्द लिया।

युवाओं एवं विद्यार्थियों में शास्त्रीय संगीत के प्रति लगाव उत्पन्न एवं शास्त्रीय विद्याओं से अवगत कराने के लिए राष्ट्रीय स्तर की संस्था "स्पिक

शहनाई की धुन छेड़ते उस्ताद मुमताज हुसैन खान।

उस्ताद का स्वागत करते स्कूल के प्रधानाचार्य श्री एम०ए० खान।

मैके'' एवं शब्दम् के तत्वावधान में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उस्ताद मुमताज हुसैन खान ने शहनाई में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया। साथ ही विभिन्न रागों एवं उसकी धुनों का भी प्रदर्शन किया यथा राग तोड़ी, बधाई के धुन, राग भैरवी इत्यादि।

15 अगस्त की शाम 7 बजे हिन्द परिसर स्थित स्टाफ क्लब में उस्ताद ने भारी भीड़ के बीच शहनाई की धुनों को छेड़ा। जहाँ कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में बधाई धुन से शुभारम्भ किया, वहीं ''सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'' पर आजादी की शहनाई का समापन।

'शहनाई' एक परिचय

शहनाई : विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर बजाया जाने वाला लोक वाद्य है, बंसी की भांति भी शहनाई में भी 7 स्वरों के छिद्र रहते हैं, जिन्हें अंगुलियों द्वारा दबाने व खोलने से विभिन्न स्वर पैदा होते हैं, किंतु शहनाई की ध्वनि वंशी की ध्वनि के मुकाबले अधिक मधुर मानी जाती है। सम्राट अकबर की सभा में शहनाई वादकों को सम्माननीय स्थान प्राप्त था। इसके निर्माण में भी वही सिद्धांत काम करता है जो बंसी का है, पर हां, कुछेक अंतर अवश्य रहते हैं। जैसे मुख्य नलिका वंशी की रीड से भिन्न रहती है, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां शहनाई के सर्वश्रेष्ठ व अमर वादकों में से हैं।

उन्होंने इसे लोक–संगीत के सीमित क्षेत्र से बाहर निकाल कर आभिजात्य वर्ग में लोकप्रिय किया।

उस्ताद की शहनाई की धुन 'सारे जहाँ से अच्छा––' पर बच्चे ताली बजाने से नहीं रूके।

वाग्देवी के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का प्रारम्भ करते उस्ताद मुमताज हुसैन, डा० रजनी यादव व अन्य।

शिक्षक दिवस

- **कार्यक्रम विषयः** शिक्षक दिवस पर अध्यक्ष का संदेश एवं विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रबंधकों एवं प्राचार्यों व प्रधानाध्यापकों को औषधीय पौधों का वितरण।
- **दिनांकः** 5 सितम्बर 2009 • **समयः** प्रातः 9:00 बजे से 6:00 तक • **स्थानः** शिकोहाबाद एवं सिरसागंज के विद्यालय एवं महाविद्यालय
- **संयोजनः** शब्दम्

बी0डी0एम0 डिग्री कालेज में शिकोहाबाद के नगर पालिका अध्यक्ष एवं प्राचार्या डा0 पदमा शर्मा को हरित कलश व शब्दम् की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज का सन्देश भेंट।

शब्दम् द्वारा पौधों का वितरण

"जो भी देश आगे बढ़े हैं वे अच्छी शिक्षा के बल पर ही बढ़े हैं। देश में अच्छी शिक्षा पाने वालों की विदेशों में भी मांग है। अच्छी शिक्षा देने वाला शिक्षक देश का गौरव है, संस्कृति है, वह राष्ट्र का मस्तिष्क है, रीढ़ है, प्रगति है, जनक का जनक है एवं राष्ट्रनिर्माताओं का निर्माता है।" उक्त विचार शब्दम् की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षकों को भेजे अपने संदेश में कही।

शिक्षक दिवस पर शब्दम् की ओर से नगर के महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में अध्यक्ष का संदेश एवं औषधीय पौधा (घृतकुमारी/ग्वारपाठा) इस उद्देश्य से भेंट किया गया कि संस्कृति एवं प्रकृति की रक्षा का संकल्प शिक्षक व छात्र दोनों लें। उपरोक्त औषधीय पौधे से कई पौधे निकलेंगे जो छात्रों को भी दिये जो सकते हैं, जिससे कि समाज को स्वस्थ वातावरण मिल सके।

साहित्य, संगीत और कला को समर्पित संस्था शब्दम् ने नगर के कालेजों और विद्यालयों में गमले में लगे पौधे भेंट किये। इस अवसर पर शब्दम् की अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज का संदेश स्कूलों को दिया गया तथा पर्यावरण को बचाने के लिए

नारायण डिग्री कालेज के प्राचार्य श्री जे0एस0पी0 द्विवेदी को हरित कलश व शब्दम् की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज का सन्देश भेंट।

छात्र–छात्राओं को वृक्षारोपण करने के लिए प्रोत्साहित किया।

'शिक्षक राष्ट्रनिर्माताओं का निर्माता है'

शब्दम् अध्यक्ष का संदेश

''शिक्षक राष्ट्र का मस्तिष्क है, मेरूदण्ड है, क्योंकि किसी भी देश की वह संस्कृति ज्ञान, विज्ञान, कला और प्रगति का निर्माता है।

''वह जननी और जनक का जनक है।

''वह राष्ट्रनिर्माता और 'लीडर' का भी जनक है। शिक्षक कलाकार, वैज्ञानिक, चिन्तक, लेखक, कवि, शिल्पकार, चित्रकार, गायक, भक्त सबको उसकी प्रतिभा के हिसाब से गढ़ता है, उसी तरह जैसे मूर्तिकार या कुम्भकार समय–समय पर नये–नये खिलौनों का निर्माण करता है, रंग भरता है।

''शिक्षक एक अच्छे इंसान और नागरिक को तैयार करता है, अच्छे नागरिक राष्ट्र निर्माण करते हैं।

''शिक्षक की सही दिशा गांधी, टॉलस्टाय, लिंकन, विवेकानन्द, कबीर और तुलसीदास का निर्माण करती है।

''शिक्षक का अपने विषय का ठोस ज्ञान और उसमें लिपटा रेशमी मूल्यों का अमूल्य ज्ञान छात्र को उन्नति के पथ पर ले जाता है।

''मूल्यों से हीन अक्षर ज्ञान, और डिग्री सिर्फ भ्रष्टाचार को जन्म देती है।

''आइये ! इस शिक्षक दिवस पर हम सब शिक्षक प्रण करें, हम अपने छात्रों को सही शिक्षा ज्ञान देते हुए हमारी संस्कृति के मूल्यों से भी अवगत करायेंगे। शिक्षण को एक पेशा ही नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय उत्तरदायित्व के रूप में निभायेंगे।''

लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल के स्टाफ के साथ कु0 गीतिका बजाज।

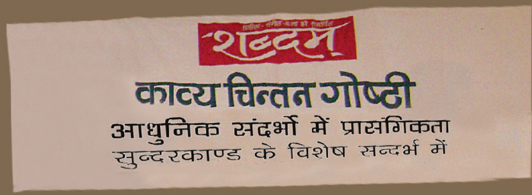

श्रीरामचरित्मानस की आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता

- **कार्यक्रम विषयः** सुन्दरकाण्ड के विशेष सन्दर्भ में
- **दिनांकः** 30 सितम्बर, 2009 • **समयः** साय : 6:30 बजे • **स्थानः** स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद
- **संयोजनः** शब्दम्, संस्थान शिकोहाबाद
- **आमंत्रित वक्ताः** श्री शिवओम अम्बर

शिकोहाबाद, दिनांक 30 सितम्बर, 2009 साहित्य–संगीत–कला को समर्पित संस्था 'शब्दम्' के संयुक्त तत्वावधान में स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर में 'सुन्दरकाण्ड के विशेष सन्दर्भ में गोष्ठी का आयोजन' किया गया।

स्वतंत्रता के बाद की राजनीति ने समाज को एक अलग प्रकार की संस्कृति दी है। नयी संस्कृति वाले इस परिवेश में धार्मिक सरोकार प्रायः विलुप्त हो चले हैं। एक समय जब भारतवर्ष की पूरी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था धर्मग्रंथों पर आश्रित हो कर ही चलती थी, तब मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता और सचेतना का स्तर उंचा और व्यापक था। आजादी के बाद पैदा हुई कई मुश्किलों में एक यह भी है कि लोग आम पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं और टेलीविजन के चैनलों में संस्कृति की जड़ें खोजते हैं। ऐसे में जो भटकाव पैदा हुआ है उससे निजात पाने का मार्ग खोजना होगा। यह आयोजन उसी अंधकार में मार्ग खोजने के समान है।

बालरूप श्रीराम के चित्र के सामने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ करते श्री उदय प्रताप सिंह, श्रीमती किरण बजाज, श्री उमाशंकर शर्मा एवं डा0 शिव ओम अम्बर।

सुंदरकांड के विशेष संदर्भ में हुई गोष्ठी में शब्दम् के परिचय के साथ आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए संस्था अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज ने अपने संबोधन की शुरूवात में यह उद्‌गार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि शब्दम्' का गठन हिन्दी साहित्य और कला के उत्थान के लिये और उसके साथ–साथ सांस्कृतिक विकृतियों को दूर करने के लिये भी किया गया है। उन्होंने कहा कि संस्कृति एवं प्रकृति का समायोजन लम्बे समय से चला आ रहा है। आज भी इस सामायोजन को बनाये रखने की उतनी ही आवश्यकता है। श्रीमती बजाज ने कहा कि जब मनुष्य की इच्छा सात्विक होती है तो उसको कोई रोक नहीं पाता। शब्दम् के गठन को लेकर विचारों में जो सात्विकता रही उसी का प्रतिफलन इस संस्था के रूप में हुआ। मैं चाहती हूं

श्रोताओं के प्रश्नों का अपने अन्दाज में जवाब देते श्री उदय प्रताप सिंह

कि आप सब मिल कर इसमें और प्रगति करें। श्रीमती बजाज ने कहा कि रामचरित मानस को केंद्र में रख कर आयोजित यह सामारोह साहित्य और संस्कृति को बल देगा, यह मेरी आशा है।

देश के बड़े–बड़े काव्य मंचों से जुड़े, ख्याति प्राप्त कवि डा0 शिवओम अम्बर ने इस अवसर पर वरिष्ठ कवि उदयप्रताप को वात्सल्य के वट वृक्ष की छाया के समान बताते हुए प्रणाम निवेदित किया। शब्दम के कार्यों और प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि शब्दम, नैसर्गिक परिवेश को बिगाड़ने से बचाने के लिए चलाया गया अभियान हैं। कुछ उसी तरह का जैसा गोस्वामी तुलसीदास ने अभियान चलाया था। यदि समाज की विकृतियों को सुधार करना है तो श्रीरामचरित्मानस, श्रीमद्भागवत गीता का पाठ करना आवश्यक है। भागवान के चरित्र का अनुसरण करके मानव एक अच्छी ज़िन्दगी यापन कर सकता है। उन्होंने जोर देकर इस बात को कहा कि सुन्दरकाण्ड पढ़ा तो खूब जाता है। लेकिन समझा कम जाता है। जबकि पढ़ने के साथ, समझने की पूरी आवश्यकता है।

हिन्द परिसर के स्टाफ क्लब में आयोजित इस सामारोह में उपस्थित श्रोताओं एवं विशिष्ट महानुभावों ने आरंभिक संबोधन के पश्चात अंबर की कविताओं के माध्यम से रामचरित मानस के संदशों को सुना। कविता के माध्यम से मानस के संदेश जो आज भी लोक व्यवस्था के लिये संजीवनी बूटी के समान काम कर सकते हैं, कवि द्वारा इस दर्द के साथ प्रस्तुत किये गये कि संजीवनी तो आज भी है लेकिन उसे दुराभिमानों के पर्वत से उठा कर लाने वाला एक हनुमान चाहिये।

श्री शिवओम अम्बर के विद्वत्तापूर्ण संभाषण के उपरान्त संचालक श्री भदौरिया ने उपस्थित श्रोता समुदाय से निवेदन किया कि यदि किसी को कोई स्पष्टीकरण चाहिए या कोई आशंका हो तो वह सामने रख सकता है। इस पर श्री मंज़र उल वासै ने श्री शिवओम अम्बर के व्याख्यान के संबंध में एक स्पष्टीकरण चाहा और एक आशंका व्यक्त की। इस पर श्री अम्बर ने अत्यंत विनम्रता के साथ उनके प्रश्नों/आशंकाओं के सफल व सटीक उत्तर दिए।

डा0 शिवओम अम्बर

शिक्षाः एम0ए0 (हिन्दी), पी0एच0डी0 (हिन्दी ग़ज़ल) **प्रकाशनः** 'आराधना अग्नि की', 'शिवओम अम्बर की चुनी हुयी ग़ज़लें', 'शब्दों के माध्यम से अशब्द तक' कवि सम्मेलनों, साहित्यिक संगोष्ठियों एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों में काव्य पाठ तथा साहित्यिक विषयों में व्याख्यान। महादेवी स्मृति पीठ, फर्रूखाबाद की स्थापना। **सम्प्रति**–म्यूनिसिपल इण्टर कालेज, फतेहगढ (फर्रूखाबाद) में हिन्दी प्रवक्ता।

संपर्कः 4/10, नुनिहाई, फर्रूखाबाद, यू0पी0

कमलनयन बजाज सभागार में मना शब्दम् का पांचवा स्थापना दिवस समारोह

मुम्बई के बजाज भवन स्थित कमलनयन बजाज सभागार में 17 नवम्बर 2009 को शब्दम् ने अपना पाँचवां स्थापना दिवस समारोह मनाया। इस समारोह में वरिष्ठ हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया वरिष्ठ साहित्यकार प्रो0 नन्दलाल पाठक को। कार्यक्रम में डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डा0 महेश आलोक, श्री बोधिसत्व, डा0 सुधाकर मिश्र, श्री उदय प्रताप सिंह, प्रो0 नन्दलाल पाठक एवं श्री आसकरण अटल ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि श्री उदय प्रताप सिंह ने की। अतिथियों का स्वागत एवं समारोह के बारे में शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने कहा कि 'ऐसे आयोजनों से अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी

प.बंगाल के पूर्व राज्यपाल श्री विरेन जे. शाह का स्वागत।

के प्रति लगाव व सम्मान बढ़ेगा साथ ही महानगरीय जीवन के संत्रास से कविताओं के माध्यम से व्यक्ति को नया जीवन भी मिलेगा।'

शिकोहाबाद से पधारे डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने देशभक्ति से सम्बन्धित रचनाओं के माध्यम से अपने

मंच पर आसीन बांये से श्री देवमणि पाण्डेय, डा0 महेश आलोक, श्री बोधिसत्व, डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया, प्रो0 नन्दलाल पाठक, श्री उदय प्रताप सिंह, श्री सुधाकर मिश्र एवं श्री आसकरण अटल

भावों को व्यक्त किया। समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षरों में से एक जहाँ बोधिसत्व ने 'चाहता हूँ', 'माँ का नाच', 'पुराने जैसा', 'छोटा आदमी' आदि कवितायें प्रस्तुत कीं, वहीं डा0 महेश आलोक ने 'किसी दिन पत्थरों की सभा होगी' एवं 'चलो कुछ खेल जैसा खेलें' आदि कविताएं प्रस्तुत कीं।

डा0 सुधाकर मिश्र ने अपनी कविता के माध्यम से कृष्ण और राधा के प्रेम को प्रदर्शित किया– ''प्रेम रस पूरित रहस्यमय जुबानी सुनी बोली बृषभान सुता जगत उधार कों, बात कै बनैया तुम्हीं जगत जदुरैया सब चाहत चलन शाम जमुना कछार कौ, अरे याही हेतु भइया तुमने त्यागे बाप मइया दइया बासुरी बजैया, प्यारे जीवत उधार कौ सुनहु कन्हैया जा चरावो कहीं गइया लाल मोही का चरावो हम चराऊ संसार कौ।''

सुधाकर मिश्र ने कवि और आज की वर्तमान स्थिति पर अपने भाव कुछ यूँ व्यक्त किये–

काव्य पाठ करते श्री उदय प्रताप सिंह।

''ज्ञान का कोश कहीं अंधेरे में न खो जाय,
स्वार्थ की सेज पर इन्सानियत न सो जाय
अरे जुड़े है काव्य से हम हर तरह
इसीलिए जीत रावण हार राम की न हो जाय।''

श्री आशकरण अटल ने हास्य को प्रार्थना बताते हुये अपनी रचनाओं से लोगों के मन को खूब गुदगुदाया।

अध्यक्षता कर रहे श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा कि ''शब्दम् के प्रकाश से कविता का संसार आलोकित हो रहा है। उन्होंने अध्यक्ष श्रीमती

शब्दम् की गत ४ वर्षों के कार्यक्रमों की चित्रमय झांकी।

बजाज के इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।'' उन्होने निम्न छन्द से अपने भावों को व्यक्त किया–

''एक रम्य वाटिका में एक था कपोत युग्म,
चोंच में निबद्ध मग्न मनुहार में।
इस असार विश्व का गहे थे
बार–बार डूबते उतरते थे प्रेम पारावार में।
कोई परवाह थी न चाह थी न डाह थी
न सुविधा असुविधा की दुविधा विचार में।
सोचता हूँ दीन दुनिया में दूर थोड़ी देर
काश पक्षी होना होता मेरे अधिकार में।''

उन्होंने ग़ज़ल गीत इत्यादि से श्रोता समूह का दिल जीता।

शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने निम्न पंक्तियों से अपने विचारों को व्यक्त किया:

''तुम्हारी कृपा का कोई हिसाब नहीं है
और तुम्हारे प्रेम की कोई मिसाल नहीं है।
सूने मन में अब बजती है बांसुरी,
आनंदित हूँ मैं कोई सवाल नहीं है।
ऐसा पढ़ा एक अव्यक्त काव्य
वैसी कोई किताब नहीं है।''

श्रीमती स्वर्णा रामकृष्णन ने सरस्वती वंदना के गायन से शुभारम्भ किया।

श्रीमती किरण बजाज द्वारा संचालक श्री देवमणि पांडेय का स्वागत।

विशिष्ट श्रोतागण।

कार्यक्रम के मध्य में प्रो0 नन्दलाल पाठक को संस्था की ओर से वरिष्ठ हिन्दी सेवी सम्मान से श्री शेखर बजाज, श्रीमती किरण बजाज एवं श्री उदय प्रताप सिंह ने अंगवस्त्रम एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में श्री नंदकिशोर नौटियाल, श्री चंद्रशेखर धर्माधिकारी, श्री शेखर बजाज, बजाज इलैक्ट्रिल्स के प्रबन्धकगण, शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्य गण– उमाशंकर शर्मा, डा0 ए0के0 आहूजा, श्री मंज़र उल–वासै, डा0 रजनी यादव, डा0 महेश आलोक, साहित्यप्रेमी एवं पत्रकार बड़ी संख्या में मौजूद थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती स्वर्णा रामकृष्णन के सुमधुर गायन से हुआ। संचालन युवा कवि श्री देवमणि पाण्डेय एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री मुकुल उपाध्याय ने किया।

प्रो0 नन्दलाल पाठक को शाल उढ़ाकर वरिष्ठ हिन्दी सेवी के सम्मान से सम्मानित करते श्री शेखर बजाज।

श्री नन्दलाल पाठक को प्रशस्ति पत्र भेंट करतीं श्रीमती बजाज।

बांए से– सर्वश्री मुकुल उपाध्याय, देवमणि पांडेय, डॉ रजनी यादव, डॉ महेश आलोक, उमाशंकर शर्मा, उदयप्रताप सिंह, प्रो. नन्दलाल पाठक, शेखर बजाज, श्रीमती किरण बजाज, डॉ. ए. के. आहूजा, श्री मंजर उल वासै। पीछे बाएं से–सर्वश्री बोधिसत्व डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डॉ. सुधाकर मिश्र।

स्त्रियों के पास दुख के अनेक पाठ हैं

स्त्रियों के पास दुख के अनेक पाठ हैं

पाठ में चालाक पुरोहित हैं और नदियाँ
नक्षत्र आकाश चिड़िया आग मछली इत्यादि
कुछ नहीं है। स्त्रियाँ अगर इस तथ्य से
चकित नहीं हैं तो इसमें चिड़िया आग मछली
इत्यादि का कोई कसूर नहीं हैं इस पर
लगभग सभी सहमत हैं

इस पर भी लगभग सभी सहमत हैं कि
दुख के वास्तविक पाठ पर वास्तविक विमर्श स्त्रियाँ
शुरू नहीं करेंगी। हो सकता है ईश्वर शुरू करे।
उसकी सराय में रहने वाले पुरोहित शुरू करें।
वह अँगूठी शुरू करे जो किसी मछली के पेट में
जाते–जाते बच गई है

किसी दूसरे ग्रह की दूसरी स्त्रियाँ अगर इस
विमर्श में साझीदार हैं तो उनकी आँख कान नाक
टखने इत्यादि हमारी स्त्रियों जैसे नहीं होने
चाहिएं इतना लगभग तय है
वहाँ पाठ का दुख है संताप है। वहाँ सड़कों
और सपनों और स्मृतियों का वजन पलकों से
उठाने का रिवाज नहीं है हृदय के पास बैठे
चंद्रमा को झुककर देखने और उसके
दाग को भी अद्‌भुत मानने वाली संस्कृति
के बारे में तो सोचना ही निरर्थक है

स्त्रियाँ अपनी पीठ अच्छी तरह पहचानती हैं
वहाँ दुख के अनेक पाठ हैं और अनेक पाठ
उत्तर–पाठ नहीं हैं

एक अच्छा दिन बिताना मुश्किल है

एक अच्छा दिन बिताना मुश्किल है

हम दुखी न हों एक दिन
किसी को किसी पर गुस्सा न आए
प्यार ही प्यार दिखे सब तरफ

भय और झूठ कतई परेशान न करें हमारी आत्मा को

कुछ ऐसा हो कि ईश्वर
भूख से मरे एक दिन।
शायद पृथ्वी पर
न पनपे यह असाध्य रोग
युद्ध और धर्म की पुरानी किताब
चली जाए ईश्वर के साथ

इतनी छोटी–सी इच्छा
कि बस एक दिन शांति
हो जीवन में

किसी रेखा को बड़ा करने का तरीका
यह न हो कि कोई रेख मिटा दी जाए
दृश्य से

कोई मुकुट सिर की उम्र से ज्यादा कीमती न हो
कोई संग्रहालय यह घोषणा करे कि पैर
ज्यादा कीमती है किसी प्रचीन जूते से

एक अच्छा दिन ऐसा हो कि बस
सब कुछ अच्छा हो एक दिन।

महेश आलोक
जन्मः 28 जनवरी, 1963 **शिक्षाः** एम.फिल., पी–एच.डी.(हिन्दी), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। **संप्रतिः** नारायण कालेज, शिकोहाबाद के हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर। **प्रकाशनः** केदारनाथ सिंह द्वारा संपादित 'कविता दशक' में कविता संकलित। इसके अलावा कई संग्रहों में कविताएँ और लेख सम्मिलित। मराठी, उर्दू और पंजाबी में कुछ कविताएँ अनूदित। 'चलो कुछ खेल जैसा खेलें' (कविता संग्रह) नयी कविता की भूमिका आलोचना का पूर्वाध, समीक्षा के बहाने। **संपर्कः** 1,अध्यापक आवास, नारायण कॉलेज, शिकोहाबाद।

श्री नन्दलाल पाठक उपस्थित जन को सम्बोधित करते हुये।

जवाब दे

किसी को कुछ न दे,
किसी को दे तो बेहिसाब दे।
'ये' किसका इन्तज़ाम है,
मुझे कोई जवाब दे।
मुझे कोई जवाब दे।
'ये' क्या मज़ाक है
चमन को जो भी चाहे लूट ले ?
चमन के साथ जो भी चाहे
जिस तरह की छूट ले ?
उड़ा उड़ा सा रंग है,
उदास है कली, कली
शहीद का है खून,
बूँद–बूँद का हिसाब दे।

क्षमा प्रार्थना

हमें गौतम क्षमा करना, हमें गान्धी क्षमा करना,
अहिंसा के करों में आज हम तलवार देते हैं
बहुत दिन बाद फिर तलवार पर हम धार देते हैं।।

हवाओं से दिये की ज्योति जब होने लगी झिलमिल
शलभ को दीप से तब दूर रखना हो गया मुश्किल
शहीदों की चिताएं ज्योति को देंगी नया जीवन
दिये की काँपती लौ को शलभ का प्यार देते हैं
शलभ को आग से अभिसार का अधिकार देते हैं।

लहू के घूँट पीकर हम व्यथाएँ झेलते आए
भविष्यत् की तरफ संघर्ष को हम ठेलते आए।
लिखा है एशिया के भाग्य में कुछ और ही शायद
प्रलय के ग्राहकों को हम प्रलय साकार देते हैं।
प्रलय की कल्पना को पार्थिव आधार देते हैं।

हमारे नाम से ही शान्ति का अस्तित्व था अब तक।
युधिष्ठिर सा हमारा अति सरल व्यक्तित्व था अब तक।
शमी के वृक्ष से गाण्डीव लेकर आ गया अर्जुन
उसे हम शक्ति का उद्दाम पारावार देते हैं।
युगों से मौन पारावार को हम ज्वार देते हैं।

हमें गौतम क्षमा करना, हमें गांधी क्षमा करना,
अहिंसा के करों में आज हम तलवार देते हैं।

नन्दलाल पाठक

जन्मः 3 जुलाई, 1929, औरिहार, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सोफ़ाया महाविद्यालय (1953–89) स्नातकोत्तर प्राध्यापक, मुंबई विश्वविद्यालय (1959–89) 'कारा' (CARA) Conference on Asian Religions and art के सदस्य के रूप में दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के अधिवेशों में सक्रिय योगदान। अध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
सांस्कृतिक संस्था 'शब्दम्' के न्यासी संस्थापक एवं उपाध्यक्ष। 'महाभारत कथा', मैं दिल्ली हूँ, माँ शक्ति', 'विष्णु पुराण' इत्यादि टी. वी. श्रृंखलाओं के साहित्यिक सलाहकार।
कविता–संग्रहः 'धूप की छांह' (1975) अपने युग का भावात्मक प्रतिबिम्ब है।
हिन्दी गज़ल–संग्रहः 'जहाँ पतझर नहीं होता'–हिन्दी ग़ज़ल लेखन के क्षेत्र में व्याप्त अराजकता को व्यवस्था की ओर ले जाने का प्रयास है, ताकि हिन्दी ग़ज़ल 'हिन्दी' भी हो और ग़ज़ल भी।
भगवद्‌गीता–आधुनिक दृष्टि : भगवद्‌गीता का उसके रचनाकाल के ऐतिहासिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक धरातल पर एक नवीन अध्ययन है।
नया कविता–संग्रहः 'फिर हरी होगी धरा' आज की हिन्दी कविता के तीन आयामों कविता, ग़ज़ल और मुक्तक का सम्मिलित रूप है, जिसमें देश और काल के हृदय की धड़कन समाविष्ट है।

माँ का नाच

—बोधिसत्व

वहां कई स्त्रियां थी जो नाच रहीं थीं गाते हुये।
वे खेत में नाच रहीं थीं या आंगन में।
ये उन्हें भी पता नहीं था।
एक मटमैले बितान के नीचे चल रहा था यह नाच।
कोई पीली साड़ी पहने थी, कोई धानी, कोई गुलाबी, कोई जोगनी सी।
सब नाचते हुए मदद कर रहीं थीं एक दूसरे की।
थोड़ी देर नाच कर हट जाती थीं, वे नाचने की जगह से।
कुछ देर बाद बारी आई मां के नाचने की—
कुछ देर बाद बारी आई मां के नाचने की।
उसने बहुत सधे हुए ढंग से शुरू किया नाचना।
गाना शुरू किया बहुत पुराने तरीके से, कोई बहुत पुराना गीत।
मां के बाद नाचना था जिन्हें वे भी, जो नाच चुकीं थी वे भी
अचंभित मन ही मन नाच रहीं थी मां के साथ।
मटमैले बितान के नीचे, इस किनारे से उस किनारे नाच रही थी मां।
पैरों में बिवाइयां गहरे तक फटी—
पैरों में बिवाइयां गहरे तक फटी।
टूट चुके थे घुटने कई—कई बार,
झुक चली थी कमर,
पर, जैसे भंवर घूमता है।
जैसे बवण्डर नाचता है,
वैसे नाच रही थी मां।
आज बहुत दिनों बाद उसे मिला था नाचने का मौका।
वैसे तो पिता के संकेतों पर नाचती रही थी वो उम्र भर
और आज नाच रही थी वह बिना रुके
गा रही थी कोई बहुत पुराना गीत गहरे शुरू में
किन्तु अचानक ही हुआ मां का गाना बन्द
पर नाचना जारी रहा।
वह इतनी गति में थी कि बरबस घूमती जा रही थी।
फिर गाने की जगह उठा करुण रुदन का स्वर
और फैलता चला गया उसका व्यतान्त।
मां नाचती रही रोते हुए।
धरती के इस किनारे से उस किनारे तक
समुद्र की लहरों से जुते हुए खेत तक
सब भरे थे उसकी नाच की धमक से
सब में समा गया था उसका बिलखता हुआ गाना।

बोधिसत्व

जन्मः 11 दिसम्बर 1968 को उत्तर प्रदेश के भदोही जिले के गाँव भिखारी रामपुर में।

शिक्षाः इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. और वहीं से तार सप्तक के कवियों के काव्य सिद्धान्त पर पीएच0डी0।

यूजीसी के रिसर्च फैलो रहे।

प्रकाशनः कविता संग्रह 'सिर्फ कवि नहीं', 'हम जो नदियों का संगम हैं' और 'दुख तंत्र'।

सम्मानः भारत भूषण अग्रवाल सम्मान, गिरिजा कुमार माथुर सम्मान, संस्कृति अवार्ड, हेमंत स्मृति सम्मान।

अन्यः दो कविताएं मास्को विश्वविद्यालय के एम.ए. के पाठ्यक्रम में शामिल थीं।

संपर्कः श्री गणेश को.हा.सो.,
स्वातन्त्रय वीर सावरकर मार्ग,
सेक्टर न. 3,प्लॉट नं. 233, फ्लैट नं.3, चारकोप,
कांदीवली पश्चिम मुंबई—400067
मो. नं. 98202125723
abodham@gmail.com,
http://vinaypatrika.blogspot.com

चयनित रचनाएं

–डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

"नेताजी ने कहा देशवासियों से खून दो,
प्रेम का प्रतीक ही मशाल लगने लगा।
स्वतंत्रता की सुन्दरी से भगत सिंह को प्रेम हुआ,
तो फांसी का फंदा ही वरमाल लगने लगा।
बेंतों की चोट चिकोट बनी देह की,
देशप्रेम में ही यह कमाल लगने लगा,
माउजर की गोली से शेखर ने होली खेली,
तो लाल–लाल खून ही गुलाल लगने लगा।"

नारी अस्मिता

"नारी नयन नक्शों पर यदि बंकिम बाबू लिखते गीत,
तो वंदे मातरम राष्ट्रगान नहीं मिलता ।
नायिका के नयनों में डूब जाते बिस्मिल
तो सरफरोशी वाला बलिदान नहीं मिलता।
ब्याह करके विलासी यदि बन जाते भगत सिंह
तो शौर्य के सूर्य का बिहान नहीं मिलता।
और नारी बाहुबंधनों में बंध जाते आजाद
तो आज हमें आजाद हिन्दुस्तान नहीं मिलता।"

जटायु

जटायु के सामने सीता का हरण था,
भीष्म की समस्या थी द्रौपदी के चीर की।
अधम जीव होकर जटायु तो जूझ गये,
फड़की न भुजा भीष्म जैसे वीर की।
इसीलिए उनको तो लेने गये यमराज
किन्तु रघुराज ने गति की गिद्ध के शरीर की।
वाणों की शय्या पर सोये भीष्म अन्त काल
मिल गई गिद्ध को ही गोद रघुवीर की।

डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया
आयुर्वेद स्नातक। वेद, उपनिषद, दर्शन के गहन अध्येता। पुराण, महाभारत, रामायण के प्रेरक प्रसंगों पर आधुनिक दृष्टि से काव्य सृजन। कवि सम्मेलनों में वीर रस तथा आध्यात्मिक कवि के रुप में सम्पूर्ण भारत तथा नेपाल में काव्य पाठ। भारत, नेपाल, मारीशस की पत्र–पत्रिकाओं में कविता, निबन्ध एवं समीक्षाओं का प्रकाशन। सात काव्य ग्रन्थों का प्रकाशन, देश के अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत।

चाँदनी

—उदय प्रताप सिंह

जब से सँभाला होश मेरी काव्य चेतना ने
मेरी कल्पना में आती–जाती रही चाँदनी।

आधी–आधी रात मेरी आँख से चुरा के नींद
खेत–खलिहान में बुलाती रही चाँदनी।
सुख में तो सभी मीत होते किन्तु दुख में भी
मेरे साथ–साथ गीत गाती रही चाँदनी।
जाने किस बात पे मैं चाँदनी को भाता रहा
और बिना बात मुझे भाती रही चाँदनी।

कल रात कमरे में खिड़की के रास्ते
उतर आई किरनों की डोरी–डोरी चाँदनी।
देखता रहा ठगा–ठगा कि परियों के रूप
को भी मात करती थी गोरी–गोरी चाँदनी।
मेरे सिरहाने आके तकिये पे बैठ गई
थपकी दे गाने लगी लोरी–लोरी चाँदनी।
मुझको तो भेज दिया सपनों की दुनिया में
बाद में खिसक गई चोरी–चोरी चाँदनी।

नीली–नीली चूनरी पे हीरे–हीरे टाँकती है
आईने में झील के सँवरती है चाँदनी।
यामिनी में अवनी के फूल–फूल सेज पर
नायिका–सी नभ से उतरती है चाँदनी।
बाहुओं के व्योम में समाई अभिसारिका सी
प्रेम उन्माद में सिहरती है चाँदनी।
जिसके लगी है वही जानता है कैसे–कैसे
सीने से कटारी–सी गुजरती है चाँदनी।

श्री उदय प्रताप सिंह
राष्ट्रीय विचारधारा के उद्घोषक कवि व लेखक, प्रवक्ता एवं प्राचार्य के पद पर कार्य करते हुए एक आदर्श शिक्षक के रूप में ख्याति। लोकसभा, राज्यसभा एवं राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व सदस्य। १९९३ में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के भारतीय दल के अध्यक्ष 'पेरामारीबू' विश्वविद्यालय द्वारा 'आचार्य' की मानद उपाधि। अनेक पुरस्कारों के साथ उ.प्र. सरकार के प्रतिष्ठित 'यश भारती' से सम्मानित। शब्दम् की ओर से 'वरिष्ठ हिन्दी सेवी सम्मान।

संत कबीर का नाट्य मंचन

- **कार्यक्रम विषयः** संत कबीरः श्री शेखर सेन के एक पात्रीय प्रयोग की प्रस्तुति
- **दिनांकः** 25 दिसम्बर, 2009 • **समयः** साय 6:15 बजे • **स्थानः** गांधी चौक, वर्धा (महाराष्ट्र)
- **संयोजनः** श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट, वर्धा एवं शब्दम्
- **आमंत्रित कलाकारः** श्री शेखर सेन

संत कबीर का नाट्य मंचन : शेखर सेन के एक पात्रीय प्रयोग की प्रस्तुति

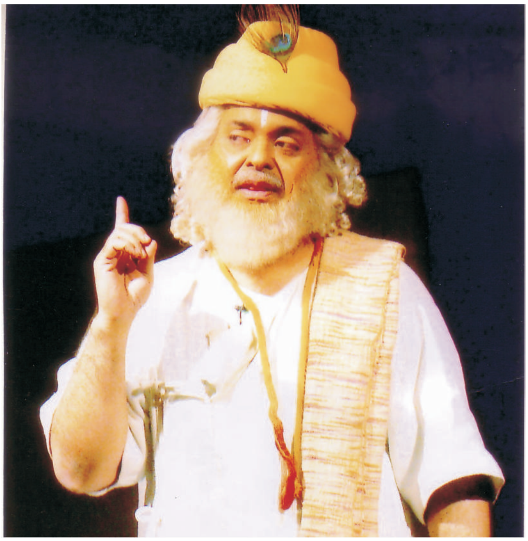

वर्धा के श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट तथा शब्दम् के संयुक्त तत्वावधान में मुम्बई के विख्यात रंगकर्मी एवं संगीतज्ञ शेखर सेन ने अपने प्रभावी प्रतिभा से कबीर को साकार किया। यह एक पात्रीय नाट्य प्रयोग स्थानीय गांधी चौक में सम्पन्न हुआ। कबीर के पदों एवं दोहों को लोगों ने तानपुरे पर ही मात्र गाने की वस्तु समझ रखी है लेकिन शेखर सेन ने कबीर के पदों को मंच पर ला कर नया भावविश्व खड़ा कर अपने प्रभावी अभिनय से कबीर – चरित्र को जनता के हृदय में उतारा। ज्ञातव्य है कि श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट एक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संस्कारों का न्यास है वहीं शब्दम् साहित्य, संगीत तथा कला के क्षेत्र में कार्यरत संगठन है।

श्री शेखर सेन ने ‘कबीर’, ‘तुलसी’ और ‘विवेकानन्द’ जैसी प्रतिभाओं का नाट्य रूपांतरण कर रंगमंच के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान स्थापित कर ली है। अपने एक पात्रीय प्रयोगों द्वारा दर्शकों को वे मंत्रमुग्ध कर लेते हैं।

श्री शेखर बजाज श्री शेखर सेन का स्वागत करते हुए।

आज तक उन्होंने अपने एक पात्रीय नाट्य प्रयोगों की 1400 से अधिक प्रस्तुतियां दी हैं। 'कबीर' नाट्यकृति के रचयिता निर्देशक, संगीतकार व अभिनेता स्वयं शेखर सेन हैं।

इस कार्यक्रम में श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री शेखर बजाज ने कलाकार श्री सेन का स्वागत करते हुए कहा कि इस तरह की भक्ति कालीन संत परम्परा को जीवित रखने का श्रेय श्री सेन जैसे समर्पित रंगकर्मियों को जाता है। इस आयोजन में सर्वश्री राहुल बजाज, मधुर बजाज, नीरज बजाज, श्रीमती मीनल बजाज, अनंत बजाज, पूजा बजाज आदि बजाज परिवार

के प्रमुख सदस्य तथा शहर के असंख्य सुधी नागरिक भारी मात्रा में उपस्थित थे। आम लोगों ने इस आयोजन की प्रशंसा करते हुए प्रतिवर्ष ऐसे कार्यक्रम होते रहें यह इच्छा जाहिर की।

शेखर सेनः

रायपुर (छत्तीसगढ़) में जन्मे शेखर सेन को संगीत अपने माता पिता से विरासत में मिला। रसखान, रहीम, नरोत्तमदास, भूषण, ललित किशोरी आदि के काव्य गायन से मानो लोगों का दुबारा परिचय हुआ। मीरा से महादेवी तक, कबीर, तुलसी सूर के पदों व आधुनिक कवियों की रचनाओं का सुमधुर प्रस्तुतिकरण किया।

साहित्य और संगीत की निरंतर साधना करते हुए शेखर की अभिनय प्रतिभा से भी लोगों का परिचय हुआ। अपने लिखे तीनों एकपात्रीय संगीतमय नाटकों 'तुलसी', 'कबीर', 'विवेकानंद' की अभूतपूर्व सफलता से शेखर ने नये कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

वहीं अपने गायन व नाटक के 1400 से अधिक आकर्षक प्रस्तुतियों से उन्होंने लोगों का हृदय भी जीता है। 'कबीर', 'तुलसी' व 'विवेकानंद' भारत के पहले नाटक हैं जिनके ऑडियो कॅसेट्स व सीडी भी प्रसारित हुए हैं।

कबिरा खड़ा बाज़ार में, सबकी मांगे खैर
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर

••••

माला फेरत जुग भया, फिरा न मनका फेर
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर

••••

माटी कहे कुम्हार से, तू क्यों रूंधे मोय
इक दिन ऐसा आएगा, मैं रूंधूंगी तोय

••••

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय
जो सुख में सुमिरन करैं, दुख काहे को होय

प्रश्नमंच

हिन्दी भाषा के उन्नयन हेतु शब्दम् का एक सतत् प्रयास

स्कूली बच्चों को सम्बोधित करतीं श्रीमती बजाज।

विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के हिन्दी के व्यावहारिक ज्ञान (वर्तनी, शब्दार्थ एवं उच्चारण आदि), व्याकरण संम्बधी ज्ञान, साहित्य एवं साहित्यकारों संम्बधी ज्ञान के वृद्धि के लिए शब्दम् ने अपने लोकप्रिय कार्यक्रम ''प्रश्नमंच'' के माध्यम से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों मे पैठ बनाई है। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रधाना–ध्यापकों/प्राचार्यों से लेकर छात्र–छात्राओं का उत्साह देखते ही बनता है। प्रश्न मंच के आयोजन के सम्बन्ध में विभिन्न विद्यालयों/महाविद्यालयों के प्राचार्य/प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक कहते हैं कि ''शब्दम् का यह कार्यक्रम सर्वाधिक उपयोगी होने के साथ ज्ञानवर्धक व विद्यार्थियों के हिन्दी ज्ञान को पुष्ट एवं शुद्ध करता है।''

विगत कुछ वर्षों से चल रहे इस कार्यक्रम को मंज़र उल वासै जैसे हिन्दी सेवी ने निस्वार्थ भाव से शब्दम् के माध्यम से प्रश्न मंच को एक नई गति दी है। वर्ष 2009 में शब्दम् की ओर से जहाँ शिकोहाबाद नगर के मधु माहेश्वरी स्कूल, यंग स्कॉलर्स अकेडमी, राज कॉन्वेंट पब्लिक स्कूल, ज्ञानदीप सी0 से0 पब्लिक स्कूल, न्यू गार्डेनिया सी0सेके0 पब्लिक स्कूल, नारायण महाविद्यालय तथा सिरसागंज के ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी एवं इन्दिरा मेमोरियल पब्लिक स्कूल में प्रश्न मंच का आयोजन किया गया वहीं ग्रामीण क्षेत्र के संत जनू बाबा इण्टर कॉलेज में भी प्रश्न मंच ने प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रश्नों का सही उत्तर देने पर विद्यार्थियों को शब्दम् की ओर से पुरस्कार स्वरूप एक लेखनी दी जाती है। हिन्दी ज्ञान के परिवर्धन की दिशा में शब्दम् का यह सतत् प्रयास निरन्तर निर्बाध रूप से जारी है।

प्रश्नमंच में पूछे जाने वाले प्रश्नों पर एक दृष्टि

भाषा विज्ञान, हिन्दी साहित्य, व्याकरण एवं गीता, उपनिषद एवं भागवत से संबधित

प्रश्नोत्तरी

प्र.1. ''अबीर'', जिससे होली खेली जाती है किस भाषा का शब्द है?

उ.1........''अबीर'' अरबी भाषा का शब्द है।

प्र.2. ''पुर तें निकसी रघुवीर वधू, धरि धीर दये मग में डग द्वै''

1.किसकी पंक्ति है? 2. पुस्तक का नाम?

उ. 2. 1. गोस्वामी तुलसीदास। 2. कवितावली।

प्र.3. मुंशी प्रेमचन्द की एक पुस्तक प्रतिबंधित हो गई थी। उसका नाम बताइये?

उ.3. सोज़–ए–वतन।

प्र.4. बात यह है 'कि.'.............

मैंने उससे पूछा 'कि'.............

'कि' (That) किस भाषा का शब्द है ? और व्याकरण में क्या है?

उ.5. फ़ारसी भाषा का शब्द है, व्याकरण में अव्यय।

प्र.6. कबीर का संकलन किस संग्रह में है?

उ.6. बीजक।

प्र.7. 'गल्प' किसे कहते हैं या गल्प क्या है?

उ.7. गप्प का तत्सम

छोटी कहानी, लघुकथा

प्र.8. विवादित कृति 'लज्जा' किसकी लिखी हुई है और उसकी 'विधा' क्या है ?

उ.8. लेखिका : तसलीमा नसरीन

विधा : उपन्यास

प्र.9. 'केसव कहि न जाय का कहिए' किसकी पंक्ति है और किस पुस्तक से है?

उ.9. 1. गोस्वामी तुलसीदास 2. विनय पत्रिका।

प्र.10. 'कोई' व्याकरण की दृष्टि से क्या है ?

उ.10. सर्वनाम

प्र.11. 'हिन्दी' किस भाषा का शब्द है ?

उ.11. फ़ारसी भाषा का ।

प्र.12. 'मृत्तिका' का क्या अर्थ है ?

1.मरने वाली, 2. मृत स्त्री, 3. मिट्टी 4. मिट्टी की बनी कटोरी।

उ.12. मिट्टी ।

प्र.13 सभी कुछ / सब कुछ जानने वाला के लिए एक शब्द बताइए।

उ.13. सर्वज्ञ।

प्र.14. 'कृष्णाष्टमी' कब मनायी जाती है ?

उ.14. भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को।

इसी को जन्माष्टमी भी कहते हैं।

प्र.15. 'जो कार्य कठिन हो' के लिए एक शब्द बताइये ।

उ.15. दुष्कर।

प्र.16. 'नश्वर' का विलोम बताइए–

उ.16. शाश्वत।

प्र.17. 'उचित' की भाववाचक संज्ञा बताइए ।

उ.17. औचित्य।

प्र.18. 'आधुनिक मीरा' किसे कहा जाता है ?

उ.18. महादेवी वर्मा ।

बच्चों से प्रश्न पूछते श्री मंजर उल–वासै।

सही प्रश्न के जवाब में छात्रा को 'लेखनी' पुरस्कार देतीं प्रधानाध्यापिका।

प्र.19. गीता का पूरा नाम क्या है ?
उ.19. श्रीमद्भगवद्गीता ।

प्र.20. गीता का महाभारत से सम्बन्ध बताइये।
उ.20. गीता, भीष्म पर्व का उपपर्व है।

प्र.21. गीता की विशेष बात क्या है?
उ.21. कर्मयोग, सम्पूर्ण उपनिषदों का सार तत्व वर्णन ।

प्र.22. रामायण के रचयिता कौन हैं?
उ.22. महर्षि वाल्मीकि।

प्र.23. परीक्षित कौन थे ?
उ.23. अभिमन्यु पुत्र, भागवत के श्रोता।

प्र.24. प्रह्लाद के पिता।
उ.24. हिरण्यकश्यप।

प्र.25. सर्वस्व दान करने वाले पौराणिक पात्र।
उ.25. 'राजा बलि' जिनके नाम पर बलिदान शब्द बना।

प्र.26. व्यास का असली नाम क्या था ?
उ.26. कृष्णद्वैपायन ।

प्र.27. अश्वत्थामा के पिता कौन थे ?
उ.27. द्रोणाचार्य ।

प्र.28. अनंत विजय।
उ.28. युधिष्ठर का शंख ।

प्र.29. ध्रुव के पुत्रों का नाम बताइये।
उ.29. उत्कल व वत्सर।

श्यामपट पर लिख कर प्रश्न पूछते श्री मंजर उल–वासै।

प्रश्न के जवाब में अपने हाथ खडे करते स्कूली बच्चे।

सही प्रश्न के जवाब में छात्र को पुरस्कार देते श्री उमांशकर शर्मा व डा0 ए0के0 आहूजा।

प्रश्नों का जवाब देते स्कूली बच्चे।

न्यूज़ीलैंड में 'खोज' का मंचन

शब्दम के आंशिक योगदान से ऑकलैंड (न्यूज़ीलैंड) के थियेटर ग्रुप 'प्रयास' ने स्वयं अपना नाटक 'खोज' प्रस्तुत किया। ' प्रयास' पहले ही हबीब तनवीर का नाटक 'चरनदास चोर' तथा मधुर राय का 'द टैरेस' मंचित कर चुका हैं। इन्हें जनता ने काफी सराहा।

निदेशक अमित ओहदेदार ने 'खोज' नाटक की रचना मुंबई–कनाडियन लेखक रोहिटंन मिस्त्री के लेखन से प्रभावित हो कर की।

'खोज' कहानी है न्यूज़ीलैंड में बसने के दौरान भारतीयों के दुःखों और कष्टों की। दरअसल 'प्रयास' ने इन प्रवासी समुदायों के अनुभव स्वयं सुने और अमित ने इन्हें एक जाल में बुना। रिहर्सलों के बीच भी कहानी में कई चीज़ें जुड़ती चली गईं।

कहानी है मुख्य पात्र राहुल गांधी द्वारा अभिनीत जमशेद बलसारा की जो मुंबई छोड़ कर ऑकलैंड आता है। उसके चिड़चिड़े पिता (भुवनेश सोनी)

'खोज' का एक दृष्य

और बैचेन मां (रश्मि पिलपिटिया) को उसकी बहुत याद आती है। लेकिन उन्हें आशा है कि उनका बेटा न्यूज़ीलैंड में बहुत यश व धन कमाएगा।

ओहदेदार के अनुसार ''नाटक 'खोज' प्रवासी समुदाय तथा स्थानीय न्यूज़ीलैंड निवासियों को भी कड़ी चुनौती देता है लोगों और संस्कारों के प्रति पूर्वाग्रहों को। साथ ही नए वातावरण में अपने को ढालने संबंधी कई गंभीर प्रश्न भी उठाता है हालांकि उसमें थोड़ा हास्य का पुट है।''

'खोज' को दर्शकों, टीवी तथा समाचार पत्रों द्वारा काफी प्रशंसा मिली। मंचन के कई निमंत्रण भी प्राप्त हुए हैं।

–ऑकलैंड से शब्दम प्रतिनिधि
सुदीप्ता व्यास की रिपोर्ट

'खोज' के विभिन्न दृष्य

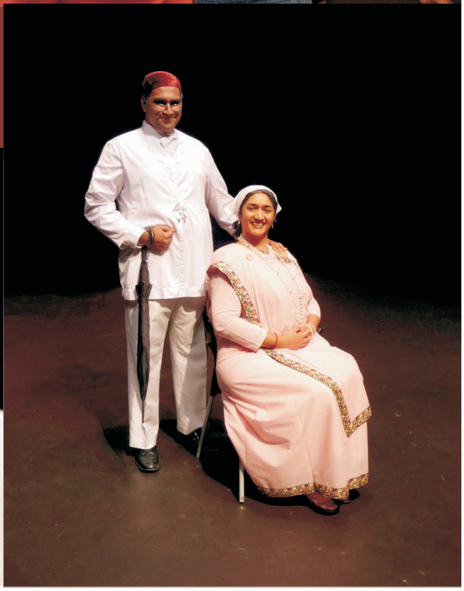

'शब्द्म'
अंतरराष्ट्रीय नाट्यलेखिका परिषद

शब्दम तथा बजाज इलैक्ट्रिकल्स के आर्थिक सहयोग से अंतरराष्ट्रीय नाट्यलेखिका परिषद का नाट्य समारोह 1 से 7 नवंबर 2009 को मुंबई में संपन्न हुआ श्रीमती ज्योति म्हापसेकर के नेतृत्व में महिला अधिकारों के संघर्ष में रत स्वयंसेवी संस्था ''स्त्री मुक्ति संगठन' तथा मुंबई विश्वविद्यालय की 'अकादमी ऑफ थियेटर आर्ट्स' व उसके निदेशक श्री वामन केंद्रे और उनके विद्यार्थियों के कठिन प्रयास से ही यह परिषद सफल रही। सुप्रसिद्ध अभिनेत्री शबाना आजमी ने उद्घाटन किया। 100 से भी अधिक देशी विदेशी प्रतिनिधियों ने नाट्य प्रयोगों, परिचर्चाओं कार्यशालाओं तथा नाट्य वाचन में भाग लिया।

मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, स्वीडिश भाषाओं में 50 नाट्य संहिताएं पढ़ी गईं।

भिन्न-भिन्न शैलियों में मंचित किए गए नाटकों द्वारा स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार व उनकी विविध समस्याओं को दर्शाया गया, यथा-दलित वर्ग, अनाथ तथा धर्म के माध्यम से शोषित,वेश्यावृत्ति, हिंसा, प्रेम, रवांडा हत्याकांड, आदि।

सुप्रसिद्ध रंगकर्मियों ने परिचर्चाओं में भाग लिया।

देशी विदेशी प्रतिनिधियों का एक समूह

नाट्य वाचन

सांगली की वेश्याओं की प्रस्तुति 'माई मदर'

वामन केंद्रे निदेशित 'झुलवा'

नृत्य नाटिका 'मेनका'

ज्योति म्हापसेकर लिखित 'बेटी आई है'

एस. थानेलिमा: मणिपुर लिखित-निदेशित 'रिक्शा एंड गन'

उद्घाटन व परिचर्चा :(बाएं से) डॉली ठाकोर, ज्योति म्हापसेकर, डॉ. जब्बार पटेल, ऐना के फ्रांस, डॉ चंद्राकृष्णमूर्ति, शबाना आज़मी, डॉ. वी.एन. मगारे, प्रो. वामन केंद्रे व सुषमा देशपांडे।

"अतीत के पन्नों से"

"चाँद" पत्रिका 1934 में प्रकाशित रचनाएं

मेरी समाधि पर

भाई, मुझे घृणा मत करना
नन्हा–सा है उर सुकुमार!
मुझे नहीं ऐश्वर्य–पिपासा
नहीं मुझे गौरव–आकांक्षा,
मैं न किसी का प्रतिद्वंद्वी हूँय
दुर्बल, भाग्य–विजित बन्दी हूँ।
मेरा है जीवन निस्सार!

पीड़ा दे मत झलकाओ धन–
नर्धन का धन–ऑसू के कन
मोल चुकाना है जीवन का,
देना है कर इस शाला का,
जाना है जीवन के पार!

आओ, दो दिन के जीवन में
प्रेम–भरे दो बोल बोल लो,
जीवन के विषमय प्याले में
स्नेह–सुरस दो बूँद घोल लो,
दो दिन का नश्वर संसार।

–श्री नरेन्द्र

केसर की क्यारी

ले चला जान मेरी रूठ के जाना तेरा,
ऐसे आने से तो बेहतर था न आना तेरा।
अपने दिल को भी बताऊँ न ठिकाना तेरा,
सब ने जाना जो पता एक ने जाना तेरा।
यह समझ कर तुझे ऐ मौत लगा रक्खा है,
काम आता है बुरे वक्त में आना तेरा।

–महाकवि "दाग" देहलवी

मुक्तक

हम से दिल दर्दे–मुहब्बत का दुखाया न गया,
ज़ख्म खाया किये टाँका कभी खाया न गया।
नब्ज़ की चाल सिखाई तपिशे–दिल ने मुझे,
उम्र चलते हुए गुज़री कहीं आया न गया।

–अमीर लखनवी

रिन्दी में ज़रा खौफ बुतों का न करेंगे।
डरना कभी होगा, तो ख़ुदा ही से डरेंगे।
इस हुस्न के आशिक को फना हो नहीं सकती,
जो आप पे मरते हैं, वह हरगिज़ न मरेंगे।

–अकबर इलाहाबादी

हसरत कहीं बने, कहीं अरमान हो गये,
लेकिन वह मेरे दिल में मेरी जान हो गये।
ले और उन्हें बुला मेरे ऐ बेक़रार दिल,
वह तेरी ज़िद से ग़ैर के मेहमान हो गये!

–नूह नारवी

कहता है वह मुझसे कि तुम्हें याद करूंगा,
यह क्यों नहीं कहता है कि बेदाद करूंगा।
वह मेरी लहद के लिए देता है यह धमकी,
होगी मेरे कूचे में तो बरबाद करूंगा।

–शौक लखनवी

किसी के वादे पर इतना जो इन्तज़ार किया,
अरे वह कौन सा दिल था जो एतबार किया।
सितम है लाश पर उस बेवफ़ा का यह कहना,
कि आने का भी किसी के न इन्तज़ार किया!

–अज़ीज़ लखनवी

यमुना के प्रति

किस अतीत की सुखमय घड़ियाँ,
किस निष्ठुर का प्यार सखी।
अलसायी सी चली कहाँ तुम,
लिये व्यथा का भार सखी।।

किन हाथों ने छेड़ा तेरी,
दुख–तन्त्रों का तार सखी।
किसने कहो बसाया तेरा,
आँसू का संसार सखी।।

उन्मत्ते। क्यों हुआ तुझे,
यह जीवन से वैराग सखी।
रुक–रुक कर यह किसे सुनाती,
विरह–वेदना राग सखी।।

कहाँ गया गोपी–समूह वह,
वंशी की मृदु तान सखी।
जिन्हें देखकर, सुन कर तेरे,
सुखमय होते प्राण सखी।।

हृदय उमड़ कर बरस रहा है,
क्यों आँखों की राह सखी।
जममय तन के भीतर कैसा,
जलता भीषण दाह सखी।।

झुके मौन तरूगए से किसकी,
पूछ रही हो राह सखी।

किसके मधुर विरह में चुपके,
से भरती हो आह सखी।।

तेरे हृदय–सदन में कैसी,
जलती रहती आग सखी।
किसने कहो उजाड़ा तेरा,
सपने का वह बारा सखी।।

आँसू का निस्सीम तुम्हारा,
फैला पारावार सखी।
क्या दो बूँद हमारे भी तुम–
कर लोगी स्वीकार सखी।।

–प्रो. रामकुमार वर्मा

भारतेन्दु जी का साहित्यिक हास्य

चिड़ियामार टोले के मुशायरे में नई रोशनी की एक प्रेमिका कहती है–

लिखाय नहीं देत्यो, पढ़ाय नाहीं देत्यो।
सैंया फिरंगिनि बनाय नाहीं देत्यों।।
लहंगा दुपट्टा नीक ना लागे।
मेमन का गौन मंगाय नाहीं देत्यो।।
वै गौर हम रंग संवलिया।
रंग में रंग मिलाय नाहीं देत्यो।।
हम न सोइबे कोठा अटरिया।
नदिया प बंगला छवाय नाहीं देत्यो।।
सरसों का उबटन हम न लगैबे।
साबुन से देहियां मलाय नाहीं देत्यो।।

बीता सुख

मेरा बीता सुख सोता
जग–जीवन के पल–पल में;
मैं उस पर रोया करता,
सरिताओं के कल–कल में।

जग प्यार भरी बोली में,
जब मुझसे बातें करता;
तब मेरा आकुल अन्तर,–
रो–रो क्यों आहें भरता?

ऊषा नभ वातायन में,
जब मन्द–मन्द मुसकाती;
तब मेरी इन आँखों में,
उसकी ही छवि छा जाती।
जीवन के वे दिन बीते,
जब प्रेम मुझे दुलराता;
दुख भी आता जीवन में–
आते ही सुख बन जाता।

सुख बादल भी जीवन में,
अब दुख ही दुख बरसाते;
उर के सूखे घावों को,
जो फिर से हरे बनाते।

इससे मुझ एकाकी को,
सूने में सुख सहने दो;
अपने सूने प्रियतम से,
सूनी बातें कहने दो।

जीवन के क्षण प्रति क्षण को ,
स्मृति में रोकर खोने दो;
जग हँसता है, तो हँस ले–
मैं रोता हूँ, रोने दो।

मुझको इसमें ही सुख है,
मैं रोकर विश्व रुलाऊँ;
ऑसू के गंगाजल में–
जीवन के पाप बहाऊँ।

–नर्मदा प्रसाद खरे

कमल के प्रति–

कमल! अद्‌भुत तेरे व्यापार
विहँस–विहँस कर खिल उठते हो,
हृदय खोल दिखलाते हो।
हमें बनाकर अपना बंदी
अब क्यों आँख चुराते हो?
बंद कर लिए हृदय के द्वार।
अरे निष्ठुरता के अवतार!

रूप–गन्ध बिखरा–बिखरा कर
पहले पास बुलाते हो।
मिलते हो तुम हृदय खोलकर
पर पीछे तड़पाते हो।।
छुड़ा लेते हो जब संसार।
बड़े ज़ालिम हो मेरे यार!

क्या मतवालापन था तेरी
पंखुड़ियों की लड़ियों में।
मुक्त प्रणय के मज़े मिले
बंदी– जीवन की घड़ियों में।।
अजब वह नन्हां सा संसार!
जहां का शासक पागल प्यार।।

बड़ी उमंगों से आया था,
ले घायल अरमान चला।
व्यथित हृदय के टुकड़े करके
मैं भँवरा नादान चला।।
अरे उन पंखुड़ियों का प्यार।
हो क्या मुझको दुश्वार

–शिवदत्त सिंह, बी.ए.,बी.टी.

(श्री देवराज गुप्ता द्वारा चाँद पत्रिका का अंक उपलब्ध कराया गया)

सम्मान समाचार

'परिवार पुरस्कार 2009' से सम्मानित किये गए प्रो0 नन्दलाल पाठक

साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्था 'परिवार' द्वारा शब्दम् के उपाध्यक्ष प्रो0 नन्दलाल पाठक को 'परिवार पुरस्कार –2009' से सम्मानित किया गया। विख्यात सारंगी वादक पद्मभूषण पंडित रामनारायण ने उन्हें पुरस्कार भेंट करते हुए कहा कि 'नन्दलाल पाठक का सृजन आम आदमी के सपनों का महाकाव्य है। पाठक जी को शॉल, रजत श्रीफल, स्मृति चिन्ह और 51 हजार रूपये की राशि सम्मान स्वरूप दी गई।
वरिष्ठ पत्रकार श्री विश्वनाथ सचदेव ने कहा कि 'पाठक जी को सम्मानित करने का अर्थ साधना, समर्पण और साहित्यिक मूल्यों के प्रति निष्ठा को सम्मानित करना है। विशिष्ट अतिथि श्री शचीन्द्र त्रिपाठी ने अपने व्यक्त करते हुए कहा कि 'पाठक जी की हिन्दी ग़ज़ल ने साहित्य को नया आयाम देकर उसे शिखर पर पहुंचाया है।

समारोह में पाठकजी की शिष्या राजश्री बिरला एवं शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज भी उपस्थित थे।

डॉ0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया को मिला राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान

उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ के यशपाल सभागार में अखिल भारतीय मंचीय कवि पीठ की ओर से प्रसिद्ध कवि पदम्भूषण गोपाल दास नीरज ने सुप्रसिद्ध कवि एवं शब्दम् के विशिष्ट सलाहकार डॉ0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से विभूषित किया, लखनऊ के महापौर श्री दिनेश शर्मा ने प्रशस्ति पत्र भेंट किया, भाषा संस्थान के अध्यक्ष डॉ0 गोपाल चतुर्वेदी ने अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान किये तो हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष श्री सुधाकर अदीव ने स्वागत करते हुए माल्यार्पण किया एवं 11 हजार रूपये की धनराशि भेंट की। इस अवसर पर फिल्मकार इकबाल दुर्रानी, पं0 केशरीनाथ त्रिपाठी, श्री सोम ठाकुर, शायर मुनव्वर राना सहित अमेरिका, इंग्लैण्ड, नार्वे, मॉरीशस इत्यादि देशों से काफी संख्या में हिन्दी के साहित्यकार उपस्थित रहे। पंचदिवसीय काव्य समारोह के दूसरे दिन अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी कवि सम्मेलन में डॉ0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया को देश विदेश के श्रोताओं ने सुना और सराहा।

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:
अभय दीक्षित
शशिकांत पाण्डे

शब्दम् , हिंद लैम्पस परिसर, शिकोहाबाद – 205141.
फोन: (05676)234501/503
ई–मेल: hindlamps@sify.com
www.shabdamhindi.com

हिन्दी के लिए
हम क्या कर सकते हैं

हिन्दी के लिए हम क्या कर सकते हैं

- हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।
- हम परस्पर व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करें।
- अपने गाँव एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न गतिविधियों को प्रोत्साहन दें।
- अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।
- हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को उचित सम्मान दें।
- हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।
- विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

शुरुआत अपने घर से करें

- अपने परिवार में हिन्दी के ज्ञान को समृद्ध करें।
- बच्चों में हिन्दी के प्रति सम्मान और जिज्ञासा पैदा करें।
- बच्चों के विद्यालय की हिन्दी गतिविधियों में सहयोग दें।
- हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं और संस्थाओं से जुड़ें।

सौजन्यः बजाज
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
विश्वास की प्रेरणा